

150

151

152

153

154

150 → vidli
2
152

कयी॥ उं दवस्यत्वा॥ कृष्णसर्प॥
उं हिनवधगर्भ॥ विष्णुनासर्प॥
उं तां सवित्रु॥ हिनवधसकलसः
विनिधन॥
उं यद्मानिभ॥ सुवर्णयद्मधाय॥
उं गजासिंघु॥ घृतासर्प॥
उं लंजविष्णुदा॥ विष्णुवधसर्प॥
उं हिनवधवध॥ लक्ष्मीमावायकपत
॥ उं स्वावृत्तकिं॥ काश्यपहर्त॥
उं रू॥ धानास्वा॥ उं कृतनूजाजर्त॥
उं सुतवत्स॥ कृष्णयुजर्त॥
अग्निमातीय॥ सूर्यकान्कथवाकाश
वाक्कलस्यगुरुयिवा॥ अग्निपद्माल
यद्वाक्कलीसवागुहिनानयत॥ उं
अग्निमूर्धा॥
उं नक्राहर्त॥ लवयतनिवर्तन॥
उं अयमावत॥ वलियदान॥
उं कथादमग्नि॥ उयेस्यवर्तन॥
अथप्राणादकनअस्यकली॥ अ
सुलनक॥ कवचनामठध॥ म

यतीजयत॥ धनमूदादंनयित
॥ उं अग्निमूर्धा॥ अग्निपूजन॥
अग्निन्यास॥ उं कुरुवधवध॥ अ
उं अग्निमूर्धादिव॥ ककृत॥ गऊ
नीली॥ उं यति॥ यथिवाअयंम
उं अयीअ॥
उं नता॥ ठिक्॥ उं जित्वति॥ कव॥
उं अग्निमूर्धा॥ ह॥
उं दिव॥ ककृत॥ निन॥
उं यति॥ यथिवाअयंम॥ नि
उं अयीकवचा
उं नता॥ ठि॥ न
उं जित्वति॥ अक्रायरुट॥
उं अग्नि॥ निन॥ उं मूर्धा॥ ललाट॥
उं दिव॥ मुख॥ उं कुरु॥ उं ददय॥
उं यति॥ नारी॥ उं यथिवा॥ कशी॥
उं अयं॥ उं ध॥ उं अयी॥ जाली॥
उं नता॥ ठि॥ गुरु॥ य॥
उं जित्वति॥ यादय॥
उं कुरुवध॥ अक्राय॥ अग्निमूर्धा

न्यासवदाक॥
 यमाग्निमकीकनर्ण॥
 उंमंद्रदयायनम॥
 उंम्रीनिनसत्वाह॥
 उंम्रीनिवाय
 उंम्रीकवचाय
 उंम्रीनरुणाय
 उंम्रीः अस्त्राय रुट ॥ अग्निगयनी
 ॥ उंजां नारीं वृं वक्रि चतताय ॥ उं
 जां जीं जीं मं दूं दूं दूं रुट ॥
 हस्त ॥ जा० न॥ मंडव ॥ जोतिः की क
 ल्य ॥ नलगयी ॥ उं वक्रतनलगयी
 ॥ उं विष्णुवनलगयी ॥
 उंमहर्षेनायनलगयी ॥
 नगा अग्निगृहीत्वा ॥ उं अंत्यग्निं
 मत्ता ॥ अग्निषु दक्षिण कृत्वा ॥
 यथा कार्यं सूचार्थ ॥ उं मयि गृह्णा
 म ॥ अग्निं ह्वायते ॥ उं स्वस्ति वाचन
 य ॥ ० त ॥ उं मयि गृह्णा म ॥ अग्निं ह्वायते
 ॥ मस्मो नितम ॥ ० न्धनतनय कृत्वा ॥

ॐ पृथ्वीदिविद्युः ॥ इन्द्रोऽस्य ॥
 ॐ सुमन्त्रदाय ॥ दमोस्तनमः ॥
 ॐ शर्वदाय ॥ दमोस्तनमः ॥
 ॐ सामवदाय ॥ दमोस्तनमः ॥
 ॐ अथर्ववदाय ॥ दमोस्तनमः ॥
 ॐ अग्निमीरु ॥ पूर्व ॥ समुवदाय
 तनमः ॥
 ॐ ॐ वरुण ॥ दक्षिण ॥ यशर्व
 दाय ॥ ॐ अग्नि अयाहि ॥
 यन्त्रिम ॥ सामवदाय ॥
 ॐ सनादवी ॥ इन्द्र ॥ अथर्व
 वदाय ॥
 ॐ समुवदाय अग्नि गगनाय मा
 नदेवताय गायत्री कन्दस्तनमः ॥
 ॐ शर्वदाय रावदाय गगना
 यवक्त्रदवताय हृदय कन्द
 तनमः ॥ दक्षिण ॥
 ॐ सामवदाय कास्य पलाय
 नूददवताय जगती कन्दस्त
 नमः ॥ यन्त्रिम ॥

ॐ मूषवदायवतनस्य (मरा
यमूददवतायमूनुदूय ॐ
दस २१॥ उरुना॥
इसमिधरामे॥ ॐ काभलरा
हा॥ उर्वरूषी शकूयात ॥
ॐ उभा रुदव॥ वक्रासो॥ यनी
मासन॥ ॐ हिनवगर्ग॥ ॐ
देविष्॥ यनीमासन॥
ॐ यरुष्ट ० गदा॥ यतय
मरुशली॥ ॐ आयाहिष्ट॥
उदकयूगलीयनीन॥
वक्रायूजा॥ ॐ वक्रकसन
॥ वक्रयासा॥ आना॥ यदास
स्तिनंदवः रुं ससुं वतुना
नीयीनवीनवतुवोदुःक
ली॥ उरुदयूरुकी॥ ॐ वक्र
लानम॥ ययूजायनय २॥
ॐ सर्वशायदवशा २॥
यनीनयूजा॥ ॐ दं विष्
॥ विष्यासा॥ आना॥ यदासुं
गार्हमागूर्द॥ गार्हसुं मर्कग

निरु॥ संखवक गदायदां वि
ष्ठा॥ उरुदयवनी॥ ॐ विष्
व २॥ ॐ यनीमास २॥ ॐ मू
शा २॥ वनूलाय २॥ ॐ आवे
क वाक्का॥ दक्षिणनावका
सुया॥ ॐ विष्क ननाट॥ उरु
नयलीनसुयन॥ पूर्ववत
यूजन॥ वक्रा॥ यनीन॥
ॐ द्यायव नाधियनय
वक्ररुसायवेवावनासाय
नम॥ ॐ मूयथनकाधियन
वलाकिरुसायकुमासाय
नम॥ ॐ कमायथनाधियन
यमरिखासायनम॥
ॐ उत्रियायनाकसाधिय
नम॥ खतुरुसायथनासा
यनम॥ ॐ वनूलायकसा
धियनययासरुसायमक
नासायनम॥ ॐ वायवया
लाधियनयथकुरुसाय

ॐ दत्तस्य त्वा॥ नमः स्वर्ग॥

मृगासाय नमः॥ ॐ अथ नमः
भनाभियनयन नकुलस्य
अरुयासाय १॥ ॐ नमः
नायसर्वरूपाभियनयप्रि
धूलरुक्ताय वृषरासाय
१॥ ॐ विष्णुर्वश्रुभियन
अवक्ररुक्ताय कूर्मासा
य नमः॥ ॐ वक्रनेत्रुभिय
नयययदरुक्ताय रुंसा
साय नमः॥ ॐ मधिसमस्त
दवानाभिमूर्खायः सोहि
वल्गुयप्रकरुक्ताय रुश
यसाय ॥ यत्रीसमन्विता
यवेक्षननाय नमः॥ ॐ
क्षारुनेत्र॥ यत्र धृष्टनव
रुने॥ ॐ कथानविगु॥ अ
सनयविस्तृता॥ अथा २
विधिमन्त्रकलसाचन
॥ गंगादाय नमः॥

पूर्ववदृष्टाय नमः॥ आस
विष्णुना॥ अथ मन्त्रविनिर्देश
ॐ नमः यामी॥ ॐ नमः सर्व
॥ ॐ दात्रादयी॥ ॐ वत्साः
विलंगी॥ ॐ द्रौक्षानिकला
दात्राय नमः॥ ॐ द्रौक्षानिक
नक्षाय नमः॥ ॐ द्रौक्षानका
यनमः॥ ॐ द्रौक्षाननमः॥
॥ नमः॥ ॐ युवाप्रिश्ना जटाया
नीनकाकायादिवाक्यकः॥
सायमालीप्रिष्टलीवनदी
सादानयालका॥ वद॥ ॐ उ
वनधूनवागिनधुवस्वमृत
तस्यथ॥ सुमृतीकारुवगुल
॥ ॐ स्वगतयद्यासनसं
वत्तकवल्गुमरुध्वना॥ सवे
क्षानिकनयव नदिमूर्ति
नमोस्तुते॥ ॐ द्रौक्षानका
ताय नमः॥ ॐ यत्र वीक्षवि
क्षलास्ययीनागध्वमदीद

ल३॥ कृ च वा नो ग क जे र म
 पु मा ला वि सा व न ॥ क
 लु वि क य म गू र ख र य व
 म क । क क ग ग म रू का
 दा न वे दा न वा म क ॥ व द ॥
 ॐ श्री म नू दाम रू ना य च ता
 शा व ल रू रू रू रू नो स जा ख
 ॥ य ४ ९ ८० स ग रू व न आ दि
 य क ०० रू क रू श्री मा श्री व
 पु द वा ॥ कृ ग ॥ य ना स न स
 मा नू रू क रू व रू म रू
 व ल ॥ स चो नि रू रू न द व स
 रू का ल न मा रू न ॥ श्री ग
 आ दि ॥ ॥ ॐ य सी ना रा न
 म ॥ ॐ जो न यि ता ॐ क नि न
 या वि धा ना धा मा नि व द रु
 व ना न वि धा या द वा ना नो
 म धा न क न व न ॥ ० सं य ०
 व ना र य रू न्या ॥ ॐ क नि नि

सं २

न य न म ॥ ॐ नि न व मः
 पु मा द वा य वि रू (म मू न)
 रु मा रू य न व नो कृ व ॥ ०
 वि नि रु व या द य ॥ ॐ क रू
 रू का य न म ॥ ॐ रू रू व ३
 स चो नि व रू मा य वि रू नि म
 ॥ ग रू रू य वि वि द व क नि
 रू य गि म मा द म न्ना या या द
 ॥ ॐ क रू व रू रू रू रू व
 ४ स ४ सूर्य जा ४ य का रि रू ८०
 सू री जा वी जे ४ सूर्या य ४ य वि
 १ न रू य जी म या रि स ८०
 स य रू नो या कृ थ रू वि रु
 म या रि ॥ ॐ क रू सा म य न
 ॥ ॐ रू म द वा ॥ ॐ क रू
 न य न म ॥ ॐ श्री गि मू द
 ॥ ॐ श्री या य न म ॥ ॐ रू
 श्री या सा न्मा न व ४ ॐ क रू
 य नु रू न नो य न य ४ य
 न रु । वि ष ० रि नि य य व

रुक्मिणी देवी नमः ॥ १ ॥
 गोपनीयं ॥ २ ॥
 नमः ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

[illegible]

कंसरु प्रनयनं वक्रयाति
 विरुवयन ॥ अद ॥ उं ग ना
 वमिन्दु ॥ सो ग ॥ उं हू दू सू न
 यनि ॥ ध्वे व वक्र रु सो म रु व
 ल ॥ स च य रु धि यो द व ॥
 ल क ना ऊ न भा लु न ॥ उं डं
 नि व न लो य न म ॥ उं नि वा
 नामा सि ॥ उं डं दं य न ल्य
 गू षा य न म ॥ उं न म ॥ रु
 वा य व ॥ उं डं क व वा य दू
 ॥ य ल व मा ला ॥ उं श्रु ध नू
 य नो ग ॥ उं डं कू मू दाय
 न म ॥ य नो का ॥ उं श्रु स्मा क
 मि द ॥ उं व द्रा य दू रु ट ॥
 उं व रु स्य नं धु दि न सि य
 या ना मा म न ड् दि नं ऊं सा
 य ल स्व मा म व द्ध रि ॥
 उं डं नि रु ऊ ॥ श्रु न न
 उं यं य वृ द्ध वृ स र्धि ऊ न
 नी ल यी वा चि ला रि न ॥
 न वा ॥ स रु प्र यो ऊ न व य
 वा नि ध नं म नि ॥ उं डं द

[illegible]

॥ धूयादिमुनि ॥ ॐ नंदिकालये ह्रीं
वासा प्रदात सुखमायक

खेव जया वविजया सुथा मृदवद
 नयग खेव गंगचकमना सुथा ॥ सा
 मथदिगिज खेव मणिगंगवृक्ष
 ॥ वृक्षी नारु धवी खेव द्वात्रिंशत्काः
 पिदवगा । नन्यवृषायवर्क्य ॥ ३३
 खागिस्त खेव च सर्वदवादिर्मन्त्रि
 नः ॥ गानेतामिसमस्तु ॥ मनिदानस
 माप्रिता ॥ ॐ महाविश्वामहाकाय ॥ ३४
 दयगिमहागिनि ॥ आवाहनादि ॥ ॐ कां
 अवर्जसुसितांगरेववायवकायनी
 वलिगृह २ खाहा ॥ कां कवर्जहृदक
 रेववायमाह धवीवलिगृह २ खाहा
 ॥ पूर्वदिक्कानिकला ॥ मनिनावनवा
 सिस्था माह गंग वृक्षथा गंगवदक
 थागिनीकण्ठ्यालथा ग्रहनक्षत्राः
 सिध्यः ३३ ॥ ३३ ॥ किं नव गंधर्वयिसा
 चयनयमालस्यः ॥ ३३ ॥ मां वलिगृह २
 खाहा ॥ ॐ ॥ मानूदाय ॥ ॐ मृधवाय
 दधि ॥ आवाहनादि ॥ ॐ ध्रुवसि ॥ ॐ
 मजासि ॥ ॐ या ३३ ॥ मनी ॥ ॐ मृदः

निर्विकारिना मृधयधिरिः ३३ ॥ गिरितकायना मृधिवकदिदेवा ॥

यनन ॥ ॐ कयानधिग ॥ मनाहृति ॥
 जायसाह ॥ नमास्तु नमस्वीयल्युध
 धियनथध्वन ॥ जहृजहृयकमनि
 वदार्थं मनिधीरुव ॥ पूर्वद्वार्धं मनि
 विध ३३ ॥ मस्तु यदियुधुमस्तु ॥ ३३ ॥
 पूर्वद्वार्धं मनिविधि ३॥

॥ गमादिकि ज्वावपूजनं ॥ गयणीन
 कुगनिनीद्वर्ण ॥ ॐ गत्वायामि ॥ ३३
 सन ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ मस्तुद्वर्ण ॥ ३३
 लि ॥ ॐ गगनात्वा ॥ ॐ उद्वस्वनावन
 यनम ३॥ न्यासदि ॥ ॐ ३३ ॥ विष्णु ॥ ॐ
 म्यानाधिविना ॥ ॐ द्वात्रिंशत्वी ॥ ॐ च
 त्वाविष्टं म ॥ ॐ विंशद्वात्रिंशत्वनम ३॥
 ॐ कां वनिगावर्जयनम ३॥ ॐ कां मृ
 नं तासनायनम ३॥ ॐ कां र्गिन
 नम ३॥ ध्यान ॥ ॐ कृषिसिवावनद्व
 र्गत्वस्त्रिचर्मा विरुष्टिन ३॥ वृद्धनृ
 यीमिखाकृष्टु कामकृष्टिसूयाधु
 व ३॥ पिनर्गमूलया मिथकायिना
 दृष्टकृष्टक ३॥ र्गिनीमिगलमथ
 निर्यनृत्वा मिवाग्रत ३॥ वद ३॥

[illegible][illegible]

यजिस्वा॥ॐ द्रौ निर्मदाय
नमः॥ॐ श्रुवायवीं यतिगृ
हीतगृहीतस्थो न कृत्वा
० सूरुता उलाका। नमो न
मंतां जनयः ४ सूरुनी मोन
वयुर्गं विरुगाय नमः॥
ॐ द्रौ सत्रय वनमः॥ॐ
रुत न हीनां मधुना नमः
ना विष्णवे यवज लूमनाम
नृदिः ४ दुयस्वनी ययसा
यिस्वमाना सा सीन ययसर
स्या व वृत्त॥ विष्णु त॥ॐ द्रौ
यूवा ये नमः॥ॐ आनं
गारिचिदथ सूरुसक्ति वि
ष्म नत्र ४ सविता द व नृ
। श्रुयि यथा स्वा नाम न स
थाना विष्णु जगदक्रिये
स्वमनी वा॥ॐ द्रौ मित्राय
नमः॥ॐ अद य क श्रुवि
न॥ॐ द्रौ न गृहाय नमः
॥ॐ न सूरुय स द व न सूरु

स्वमश्वा क रू वि न न ० संज
रुत॥ अद य क रू वि न
४ सध सा दा दा नी वा स सूरु
न सिम स्म॥ॐ द्रौ न ना युग
य नमः॥ॐ श्रुवा ना जाय॥
ॐ द्रौ यरु य दाय नमः॥
ॐ ००० स्व ऊ ला॥ॐ द्रौ श्रु
स्म न लाय नमः॥ॐ व द य
स्म न॥ॐ द्रौ विशा न लाय
नमः॥ॐ ००० द विष्णु॥ॐ द्रौ
स्मि व न लाय नमः॥ॐ नम
४ ००० रुवा य व॥ॐ द्रौ ग ल य
न य नमः॥ॐ ग ल नी ला॥
ॐ द्रौ सत्र सूरु नमः॥ॐ
या व काना॥ॐ द्रौ मरुतः
श्रु नमः॥ॐ श्री श्रु न ल श्री
ॐ द्रौ द्रौ न श्रुवा नाय न
मः॥ॐ यान नृद नि वा॥
ॐ श्रु स्म क मि द्रु उ द द म
त्रि क॥ॐ द्रौ मू य मा य न
मः॥ आ न॥ रु श्रु न न मरु

या नृदं दधु रु सं रु या नर्क
॥ कालया लध न को सं आ य
दक्षि लदि श्रु न ॥ यद ॥ उं य
म नद लं ॥ सं य ॥ उं दधु रु
सं य मा दधा ध मा श्रु काम
रु व ल ॥ ली व श्रु वारु यि
सं मि ध मा ना ऊ न मा २ रु
न ॥ उं दं नि व न लो य न म
॥ उं नि वा ना मा सि ॥ उं दं
दं नं यो ना य न म ॥ उं या
न नृ द नि वा न नृ ॥ य ल व मा
ला ॥ उं दं क व वा य दू ॥ उं
श्रु य लू य वा ल्मा ॥ उं दं या
य लू ली का य न म ॥ उं य द
नी न ॥ उं दं द धु य न म ॥
उं दं रु नं ॥ उं रु रु स नं रु
दि न सि ॥ रु य ॥ उं दं श्रु
य रु र ॥ नि रु ऊ ॥ उं य रु रु
यु स किं ऊ ना नी ॥ उं दं क व
ना य दू ॥ दू वा ॥ उं का लु न

॥ उं दं श्रु श्रु य रु र ॥ सर्व या
उं ०० मा नृ दा य ॥ उं दं क व
वा य दू ॥ य व सृ ग ॥ उं न का
रु न ॥ उं दं श्रु श्रु य रु र ॥
न का ॥ उं लं ऊ वि रु दा ॥
व न ना दि व लि ॥ उं का ला
गि यो गि य ना ला वं ग श्रु व
रु रु य य ॥ कामा नी ग ल नृ
द्रो य य या म्दि नि सं कि
ना ॥ न सर्व स रु द य शा व
लि रु रु रु स दा ॥ उं दं दं
सू य नि रु रु व ॥ उं य न य
था ॥ य नि रु ॥ जा य रु ग ॥ उं
य लु य व लु द व रु रु गि ग
ल य नि रु था ॥ य रु रु द रु
रु ग्रा व का व नी स न य न थ
॥ वृ य रु रु स नि रु व य लु
का व रु रु व व ॥ को मा नी व
रु वी ल कि द्वा ना रु रु रु द
व ना ॥ वा ना ली या व व रु व

दा नमश्च कृता न कशयनाका
 थ ऊरुग्रादि सर्वेदवशव
 क्तिनाशा वि आ दा न समाह
 ए न नमा मिसम सु कशा
 ॐ मंहावीयोम हा का थ रिं
 नां जन सम ग्रुं ॥ ननु दा न
 क्ति न ले लै के ता सं स्के सु ल
 रु न ॥ ॐ द व दान व ग ध वा
 ॥ ॐ श्रु यं व य र्क एादि ॥ श्रु
 गं थादि ॥ ॐ नि द क्षि ण दा
 ना र्थे न ॥ ॥ ॐ नि द क्षि
 ण दा त वि मि ॥ २ ॥ य श्चि मा
 न ल यू जा ॥ ग य य श्री न नि
 नि क्ष ण ॥ आ स न ॥ ॐ ग हा ऊ
 श्रु य्क्ष ण ॥ ॐ द व स्य हा ॥
 व लि ॥ ॐ ग ण ना हा ॥
 ॐ दा ना द वि ॥ ॐ व हा वि ष
 गा ॥ ॐ द्रु नि वृ णि दा न य न
 म ॥ ॐ व न ना न ण य न म ॥
 ॐ द्रु श्रु ना सि ना य न म ॥

आ न ॥ ॐ न क व कु व रु वा
 द ॥ गो न व रु व मा स न ॥ श्रु
 द मा ला वि धू लं व व न दा रु
 य या लि क ॥ वे द ॥ ॐ य रु व
 जी व नि के द ना न द दा स
 सं द हा ॥ रु न थ गि यू नी श्रु
 मां यो थि यू ना ॥ व मा गि व
 म ण रु न न यी ॥ समु द्रि य
 श्रु य श्रु या रि वी न थ ॥
 ॥ सा ग ॥ ॐ स गा क्री स्त रि मा
 हा स य श्चि मं दा न द क्षि ण
 सर्व य्क्षि क न नि थि र द न
 य न मा लु ग ॥ ॐ द्रु द्रु द्रु द्रु
 न म ॥ आ न ॥ ॐ न क व कु दि
 न रु न व क व रु व रु व रु
 ॥ श्रु नि व द्रु न थ ण कि र्व
 यी ण व क र्क न ॥ रा रु ऊ म
 य ना श्रु र वा न ॥ ण दा न वा
 म क स्के द नू य थ ज द व
 गो त्रि यू ग सूरु न ज सं ॥ वे द

॥ॐ यद कं द॥ सा ग॥ भ घ न
 दा स न लं व न कं व लु म रु
 यु ति । मं ग सि धि रु लं दाना
 लं द मू लि न मा नु ग ॥ॐ दं
 रं सं जी व नी न म ॥ॐ रू ना य
 ला ॥ॐ दं श्रु म न सं जी व नी न
 न म ॥ॐ दं क न ला का य न
 म ॥ॐ रू ये दा चो रू नं य रू
 या श्रु ये धं व ध्र स वि रु या य
 रु ध कानं व भि रु या ना का
 य य त्रि व रू ना ॥ॐ दं ग य
 ला का य न म ॥ॐ ग य ध्र न
 य स श्रु ॥ॐ दं रू धु का य न म
 ॥ॐ श्रु ना य त्रि ॥ॐ दं लं
 न नि ध्र ना य न म ॥ॐ लं नो
 द वी ॥ॐ दं श्रु नी ला य न म
 ॥ॐ श्रु धं ग मं य वि ॥ॐ दं श्रु
 न ला य न म ॥ॐ व स ध्र मं
 व स नि ध्र मं ॐ ला ध्र मं ग

नि ध्र म य रु न क रू ना ॥
 ॐ दं ला म रू न म ॥ॐ स
 म दानु म ना श्रु स नं नृ व
 ला ॐ रू धि वा श्रु ग ड व
 न । रू नी ये ला न क न ल्कि वा
 ॥ॐ स म दानु म य रु म रु भि रू व
 द न ॥ॐ दं वं द रू ना य न
 म ॥ॐ न दी रु ॥ यो जि रु
 वि रु लं ॥ॐ दं सा मा य न म
 ॥ॐ त नि ग रू व नू ल रू
 रु व रु सूर्य रु य रु रु
 शी रु य रु । श्रु न रु म य द
 ल द रु या स रु रु म य द
 नि रु सं रु नं नि ॥ॐ दं य
 मा य न म ॥ॐ व लं रू श्रु
 सूर्य व दा दि रु म रु श्रु सि
 म रु रु स भा रु मा य न ध्र
 न दा द व म रु श्रु सि ॥ॐ दं
 य व सा य न म ॥ॐ म द्रा द

२ य वि स ति य स रु ति म पा स रु
 त ना रु य रु व नं न मा य रु

इ रु रू ला रु न ना ॥

तानामसूयैयुवादि गावि
कुशानि नदाय न॥ ॐ द्रौ द्रौ
यन रुगाय नमः ॥ ॐ श्रुत न
जाय ॥ ॐ द्रौ साम यदाय न
मः ॥ ॐ श्रुत श्रुया ॥ ॐ श्रुत
तत्वाय नमः ॥ ॐ वक्र यस्त
न ॥ ॐ द्रौ विशातत्वाय नमः
॥ ॐ द्रौ विष्णु ॥ ॐ द्रौ विव
त्वाय नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ रुवा
यय ॥ ॐ द्रौ गल यतय नम
॥ ॐ गल नात्वा ॥ ॐ द्रौ सन
स्ये नमः ॥ ॐ याव कान ॥
ॐ द्रौ मरुतश्च नमः ॥ ॐ
धन ॥ ॐ द्रौ लसशाजा
य नमः ॥ ॐ सशाजाय नमः
॥ ॐ द्रौ सासख कर्क यनम
॥ ॐ श्रुत कर्मिद ॥ ॐ द्रौ
वलि क ॥ ॐ द्रौ न नूलाय
नमः ॥ ॐ न ॥ ॐ नाग

यागधनं द्रुतं गेलोय युनि
वियरुं गल कय वरं आय
न वनू लम कना सन ॥ ॐ द्रौ
ॐ द्रौ मभव नूला ॥ ॐ द्रौ
ना गया सात्म कं निर्यं कल
ना आम हो वला निमय (ॐ)
ववि दाना नागना को नमा
स्तुत ॥ ॐ द्रौ विवत्वाय
नमः ॥ ॐ विवनामसि ॥
ॐ द्रौ लसशाजाय नमः
॥ ॐ नमः ॥ ॐ रुवाय ॥ ॐ श्रु
स्ययनात्वा ॥ ॐ द्रौ सास
ख कर्क यनमः ॥ ॐ श्रुत
कर्मिद ॥ ॐ द्रौ ना गया लय
द्रुत ॥ ॐ द्रौ रुत्यं ॥ ॐ द्रौ
॥ ॐ द्रौ श्रुत यरुत ॥ नि
कुत ॥ ॐ द्रौ रुत श्रुत
ॐ द्रौ रुत दयाय नमः ॥
ॐ द्रौ मयाय नमः ॥ ॐ द्रौ

दा ना॥ ॐ कं क व वा य दूं॥
 दु यो॥ ॐ का कु न॥ ॐ कं ॥
 मृ क्रा य रु ट॥ च का यु का॥
 ॐ ॐ मे नू दा या॥ ॐ कं क व
 वा य दूं॥ सु ग॥ ॐ न द्या रु न
 ॥ ॐ कं ॥ मृ क्रा य न म॥ न द्या
 ॥ ॐ स ॥ वि रु द्या॥ व न्द ना
 दि व लि॥ ॐ ॐ क र्थ नी य क ल
 ती य॥ उ न्म ल व ट् कं ग य ॥
 वा ना ही ग ल नू दा य व नू ल
 दि ग सं स्क्रि ना॥ नं सर्व सं तु ॥
 य नि षा॥ ॐ कं सू य नि षा रु
 व॥ ॐ य न यं था॥ जा य स्मा न॥
 ॐ आ नि वि आ नि का ये व रु स स्त
 द स्त॥ ये व व साम द्या य न य
 ल्मे व ग लु की की स की न था॥
 लु क ल नि षा रु ल क ल ती
 ल स्त॥ ये व रु ॥ वा ना ही ये व मि
 द्या ही द्या ना र्ध व वि द व ना॥
 क यि न स था जा ना स्य ॥ या ही

वा न स्य म श्व के॥ य ना का श्व रु
 कृ ग्रा य् स र्वे द व र्णं श व स्मि
 ना॥ नि रु लि द्या न सं स्क्रि य ना
 न मा मि स म स्त का न॥ ॐ म रु
 वी र्थ म रु का य सू व र्ण स द
 र्थ य नि॥ न य द्या न स्मि नं ले
 र्थ ग ये मा द न सा रि नं॥ ॐ द
 व द्या न व र्ग यो॥ ॐ मृ य व य
 ॥ मृ ग र्ग य दि॥ ॐ ति य
 श्वि म द्या वा र्थ न॥ ॐ द्या य द
 व द्या य न म॥

॥ उ रु दि ग द्या न यू जं ग त्वा
 ॥ गाय त्री म नु ण॥ नि गी द र्थं॥
 ॐ न त्वा जा मि॥ आ स नं॥
 ॐ द व स्य त्वा॥ मृ रु द र्थं॥
 आ ना रु ना न ल य ॥ ॐ
 द्या य नि षा क ल द्या ना य न
 म॥ ॐ द्या ना द यी॥ ॐ ॐ द्या
 मृ न का स ना य न म॥

ॐ द्रौं द्यौ नमः॥ श्री न॥
सिंहासनस्ति तादवी पीतव
र्णुवर्णु क॥ ८॥ त्वत्तं न
दक्षवदय्यनया प्रवामक॥
वद॥ ॐ द्यौ विप्रनि सादवी
नस्ति डी सनस्वमी॥ सूर्य
नमश्च नाथामिंदो यदय्यवि
दियं वसूवने वसूव्य श्रीं
यं क॥ १॥ ॐ रुद्रियुष्टा
सनादया पीतवर्णु सूर्योव
नी॥ ॐ रुद्रियुष्टा रुद्रं दाना
दवी वृय नमोऽस्तुते॥ ॐ द्रौ
वर्णु यनमः॥ श्री न॥ ॐ रुद्र
वर्णु मुखं दक्षवर्णु टिका
दक्षवर्णु वान॥ ॐ रुद्रं कमल
त्वं वामेशाय वमोहि रुद्र
वी॥ वद॥ ॐ यत्थमां वा वं
कल्याणी मा वदानि जनर
॥ वद्वनाय त्वाया ॐ
दायवा यो यं स्वाययाय
ताय वयि सादवी नां दक्षि

ॐ द्रौं द्यौ विप्रनि सादवी पीतव
र्णुवर्णु क॥ ८॥ त्वत्तं न
दक्षवदय्यनया प्रवामक॥
वद॥ ॐ द्यौ विप्रनि सादवी
नस्ति डी सनस्वमी॥ सूर्य
नमश्च नाथामिंदो यदय्यवि
दियं वसूवने वसूव्य श्रीं
यं क॥ १॥ ॐ रुद्रियुष्टा
सनादया पीतवर्णु सूर्योव
नी॥ ॐ रुद्रियुष्टा रुद्रं दाना
दवी वृय नमोऽस्तुते॥ ॐ द्रौ
वर्णु यनमः॥ श्री न॥ ॐ रुद्र
वर्णु मुखं दक्षवर्णु टिका
दक्षवर्णु वान॥ ॐ रुद्रं कमल
त्वं वामेशाय वमोहि रुद्र
वी॥ वद॥ ॐ यत्थमां वा वं
कल्याणी मा वदानि जनर
॥ वद्वनाय त्वाया ॐ
दायवा यो यं स्वाययाय
ताय वयि सादवी नां दक्षि

दवी॥ॐ द्रौ विष्णु व नमः॥
ॐ श्री कृष्ण॥ॐ द्रौ कलियु
गाय नमः॥ॐ श्री कृष्ण जाया॥
ॐ द्रौ श्री धर्म वेदाय नमः॥
ॐ नमो देवी॥ॐ श्री लक्ष्मी
य नमः॥ॐ वक्रय स्नान॥
ॐ द्रौ विशा न लाय नमः॥
ॐ हृद विष्णु॥ॐ द्रौ निवत
लाय नमः॥ॐ नमः॥ॐ रुवाय
वा॥ॐ द्रौ ग लय नय नमः॥
ॐ ग ल नो ला॥ॐ स न स्य र्य
नमः॥ॐ या व का न॥ॐ मे ला
त श्री नमः॥ॐ श्री धर्म लक्ष्मी
॥ॐ द्रौ मूर्ति कृष्णाय नमः॥
॥ॐ न॥ॐ श्री ॐ कृष्ण नमः॥
मा ली न॥ स न वे ४ ख वे विद्य
हं॥ स्वर्ग का या ग दा रु स
ड रु ना धिय नि स्म न न॥
कृष्णाय न कृत्त रु स्तो य ध
ना धिय न य रु या स नो य र
॥ वेदा॥ॐ कृ वि द ग रु य व
ना॥ॐ नमः॥ॐ नमः॥ॐ नो य व

सर्वे सा॥ य द न कृ य की लि
ना॥ ग दा या नि ध वा द वा कृष्ण
वा य न मी २ मु ने॥ॐ द्रौ निव
न लाय नमः॥ॐ नि धा ना मा
सि॥ॐ द्रौ व वाम द वाय नमः
॥ॐ द्रौ वाम या॥ॐ द्रौ क व वाय
द्रु॥ॐ य ल व॥ॐ श्री स्व स्तु यं ग
॥ॐ द्रौ समुखा य नमः॥ॐ श्री
स्मा क मि द्रु॥ॐ द्रौ ग दा यः
द्रु रु ट॥ॐ द्रु रु स्य न॥ॐ द्रौ
शु क्रा य रु ट॥ॐ नि रु ज॥ॐ
य व द म॥ॐ ग म य॥ॐ नः
ध दा ना॥ॐ द्रौ द द या यः
नमः॥ॐ द्रौ क व वाय द्रु॥
ॐ का लु न॥ॐ द्रौ ॐ द्रौ नृ
का य रु ट॥ॐ न का य रु ट॥ॐ
वृ मा नू द्यो॥ॐ द्रौ क व वाय
द्रु॥ॐ द्रौ ॐ न का रु न॥ॐ
द्रौ श्रु क्रा य रु ट॥ॐ द्रौ वं ज व
रु दा॥ॐ न का॥ॐ श्री वा ना दि
॥ॐ यि सा व द व या ला य र॥
ॐ द्रौ न द्रु न॥ॐ न का य द्योः

कृष्णाय २॥ ॐ नीलयात्रा ॥
कृष्णाय नमः ॥ ॐ क
यानयि ॥ धृष्टः दीयः रुत
नवय ॥ यनिष्टा ॥ ॐ मनो
जाति ॥ जाय ॥ स्तोत्र ॥ ऊर्क
धर्ममहाकाय ॥ श्रीधर्म
धर्मधर्म ॥ नत्ता रुतवस
वोद्गदा रुत नमो मुनि
॥ श्रीगन्ध्यादि ॥

श्रुतिदिगकलसयूजर्न ॥
गायत्रीमन्त्र ॥ नित्रिष्टु
॥ श्रीधर्म ॥ ॐ नत्ताजाति ॥
श्रीसने ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥
निद्रिदावृक्षाय ॥ ॐ श्रुत
श्रुति ॥ निद्रिदाय ॥ ॐ वेदा
रुमन्त्र ॥ कृमूदधजाय ॥
ॐ श्रीसामन्त्र ॥ ॐ किय ॥
॥ ॐ यत्रयाना ॥ कृष्णाय ॥
ॐ वृक्षस्य ॥ निद्रिदाय ॥
काय ॥ ॐ ॐ श्रीसाम ॥
श्रुतिदेवताय ॥ ॐ श्रीक

कृष्णाय ॥ श्रीना ॥ ॐ सकाचियः
श्रुतिदाना ॥ श्रीमहात्म
ॐ ॥ कात्तामात्ता कर्तव्य
कागर्क ॥ ॐ श्री
येष्टाकि रुताय ॥ नत्ताजाति
नत्ता ॥ ॐ श्रीसाम ॥

ॐ श्रीमन्त्रादि ॥ श्रीवार्त
नादि ॥ यिष्टाना कर्तव्य
लाय ॥ ॐ यिष्टमन्त्र ॥

कृष्णाय नमः ॥ ॐ क
नवय ॥ धृष्टः दीयः रुत ॥
नवय ॥ यनिष्टा ॥ ॐ मनो
जाति ॥ जाय ॥ स्तोत्र ॥ श्री
ऊर्कसीन ॥ महान्त्र ॥ ॐ समय
ॐ नत्तामात्ता मन्त्रधर्म ॥ ॐ
रुत नमो मुनि ॥ श्रीगन्ध्यादि
॥

नेमत्यादिगकलसयूजर्न
गायत्रीमन्त्र ॥ नित्रिष्टु
ॐ नत्ताजाति श्रीसने ॥ देव
स्यत्वा ॥ श्रीधर्म ॥ रुति
दावृक्षाय ॥ ॐ

सुस्ति न ॐ ॥ वृषिदाय २ ॥
ॐ श्री कं क्रमा ॥ वामना कथे ॥
जाय २ ॥ ॐ श्री सा कमि न्यु ॥
स्व ज्ञाय २ ॥ ॐ जानवदस ॥
कलकृ गाय २ ॥ ॐ वृहस्पति ॥
धृतिथनाकाय २ ॥ ॐ ॐ ॐ
श्री सा ॥ श्री द्विदववडादधु ॥
ॐ विरुका न ॥ आन ॥ ॐ
नकनपुष्पवा नृत् नीलाय
लदलयरुं । कृपानियानिः
मध्यायैयिव नं ना कसम्भ
न ॥ नेसायायख रु रु सय
ना कसाधिय नथयना साय
२ ॥ ॐ जनकदवी ॥ श्री वारु
नादि ॥ श्री गिजिका कृपया
लाय २ ॥ ॐ यखद ला ॥
कृसेनयगि सु नल ॥ ॐ क
यानधिप्र ॥ धूप दीय रु
ल नवय ॥ यतिश ॥ ॐ म
नो जाति ॥ जाय ॥ सगु ॥

नेजर्थादिजिनाथ स्व हावा
नूरमहावर्त । नकमासस
दायीन स्वपुया नि नभाकु
न ॥

वायु शदिग कल सयुजा
॥ गायत्री मन्त्र ॥ निवीक
॥ ॐ नत्वा जा मि ॥ श्री सन ॥
ॐ दवर्षा ॥ श्री स्रदल ॥
धृतिवृथाय २ ॥ ॐ सनमि
न्यु ॥ निद्विदाय २ ॥ ॐ
श्री नोरुडा ॥ सर्वे नपुष्यज
य २ ॥ ॐ नाथ कृपाय २ ॥
ॐ वृहस्पति ॥ ददिय
नाकाय २ ॥ ॐ ॐ ॐ श्री सा
॥ श्री द्विदवता ग नृदाय २
॥ ॐ धुयल्लसि ॥ आन ॥ ॐ
श्री चीनरु निनकाय विः
लातख कथाजि ली । या हा
रुग २ ॥ रुगा नी रुवि
सं समीजि ली ॥ वायुवधः

ऊरुस्तय प्राणाधियनयमृ
गास्तयनम॥ॐ न व वायू॥
आवा रु नादि॥

का न यूय कृ प्रया ता य २॥
ॐ रु नं रु न॥ कृ स न य निः
रु न ना॥ॐ क या न वि रु॥
धू यः दी यः रु ल॥ न व या॥
य नि रु॥ॐ म ना जी नि॥ ऊ
य स्ता व॥ व गि नं व म रु या लं
सर्व रु न रु ना म न॥ म ग स
न सृ सो रा ऊ॥ व ऊ रु रु न
मा रु न॥ अ ग ग नादि॥

ॐ न न दी ग क ल स यू जा॥
गा य गी म रु ना॥ नि जी रु ली॥
ॐ न रु जा मि॥ अ स न॥
ॐ दे व स रु॥ अ रु रु ली॥
मा रु दा रु दा य २॥ॐ स्व सि

यं था मा॥ यू रि दा य २॥
ॐ रु रु स्य न य नि॥ अ य नि
रु व जा य २॥ॐ अ स्मा क
५ मि॥ वि रु ल रु स्ता य २॥
ॐ वि य म रु कं ऊ जा॥ का
नि रु रा य २॥ॐ रु रु स्य न
॥ सा न य ना का य २॥ॐ अ
रु रु ल रु ना॥ अ धि न व म रु
का ला य २॥ॐ नी ल यी वा॥
आ ना॥ ॐ न न रु रु रु ना
४ रु॥ वि रु ल रु ना ल रु नि ली॥
न व रु व दा न रु रु रु रु रु रु
लि रु ला रु न॥ ॐ न न रु रु
वि रु ल रु स्ता य सर्व रु ना
धि य न य रु रु रु रु मा य २॥
ॐ न मी सा न ऊ॥ आ वा रु ना
दि॥ ॥ री म यू य कृ प्र या ता य
२॥ॐ अ व वा कृ स न य नि

स्तु नमः॥ ॐ कथान्वितं॥
धूयः दीयः रुतः॥ नमः॥
प्रतिष्ठा॥ ॐ मनोज्ञानि॥
जायः स्तुता॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥
नमः॥ वृथासनसमाप्ति नमः॥
पुनः स्तुतिप्रतिष्ठा॥ धूल
यानिनमोस्तुते॥ श्रीगणेशाय
॥

शुद्धदिगकलसूक्तः॥
गायत्रीमन्त्रः॥ निर्वीक्ष्य
॥ ॐ नमो जामि॥ श्रीसन॥
ॐ दक्षस्य त्वा॥ श्रीरुद्राय॥
रुद्राय जामि॥ १॥ ॐ श्रीमाक
मि॥ वक्ररुद्राय २॥ ॐ स
यः पुत्राय ३॥ ॥ श्रीयक्षाय २॥
॥ ॐ वरुणाय॥ प्रियताका
य २॥ ॐ नववायुवरुणाय॥
॥ श्रीधनवानाग॥ ॐ नमो
स्तुते॥ श्रीना॥ श्रीनक्तयुग
त्रीकार्यं॥ रुद्रादस्यत्रि

युगं॥ विश्वदामयनीकारं
कुम्भावरुणायुक्तं॥
विष्णुवक्त्ररुद्राय श्री
प्रियताकामोस्तुते॥
ॐ प्रियताका॥ श्रीवरु
नादि॥ शुक्ररुद्रकक्षेपुय
ताय २॥ ॐ श्रीमाक
यानिस्तुते॥ ॐ कथान्वि
तं॥ धूयः दीयः रुतः॥ नमः॥
॥ प्रतिष्ठा॥ ॐ मनोज्ञानि
जायः स्तुता॥ श्रीगणेशाय नमः॥
नमः॥ वृथासनसमाप्ति नमः॥
पुनः स्तुतिप्रतिष्ठा॥ धूल
यानिनमोस्तुते॥ श्रीगणेशाय
॥

शुद्धदिगकलसूक्तः॥
श्रीसादि॥ ॐ दक्षवरुद्राय
य २॥ गायत्रीमन्त्रः॥ निर्वी
क्ष्य॥ नमो जामि॥ श्रीसन॥

ॐ दवस्य स्वा॥ श्रुत्वा दवा॥
कुम्भदधजो यः ॥ ॐ श्रुत्वा
कमिन्दु॥ यद्वरुस्कायः ॥
ॐ यद्वानिज॥ गली कृत्वा यः
॥ ॐ वरुस्य न॥ यिनवल्क्य
ना कायः ॥
ॐ नववायू॥ आनायी नयी
नं वरुवोद्वक्का लं वरुना
ननी॥ रुं सजान श्रु वि शाली
उल्लुङ्ग श्रु क म उत॥
वक्का लय दारु स्का य उ द्वा
धिय नय रुं सा सा यः ॥ ॐ व
क्का नस्य नं त्वा॥ श्रावा रुनादि
॥ मिद्वरु स्वर्क वया ता यः ॥
ॐ विस्व न वरु॥ कुं से नयः
विस्व न ली॥ ॐ कया नविगु॥
धूयः दीयः रुत॥ नेव श्रु॥
य निष्ठा॥ ॐ मनो जा नि॥ जाय
॥ स्मिन्॥ वक्का लीयी न श्रु यः
वक्का लान य ना य ली॥ यस्का

कावली रुस्मिन् उ द्वाधिय न
भा सुर्ग॥ श्रु गन्धादि॥

नेमस्य स्य यूवयाग्नि श्रुत्वा
कलस॥ ॥ गायत्री मकुल
॥ नीत्री दली॥ ॐ नत्वा जा मि
श्रुत्वा॥ ॐ दवस्य स्वा॥ श्रुत्वा
दली॥ कृत्वा यः ॥ ॐ वरुस्य
न॥ यना कायः ॥ यत्वा मू
मि॥ आना॥ विद्वत्सु उरु निरु
द्वर्त्ता निखावा न समन्विता
दक्ष भवियु लं विद्यु श्रुत्वा
यं वि रुवय न॥ ॐ श्रुत्वा ज
यः ॥ ॐ वरु श्रु म व॥ श्रावा रु
नादि॥ धूयः दीयः रुत॥
नव श्रु॥ य निष्ठा॥ ॐ मनो जा
नि॥ जाय॥ स्मिन्॥ कर्त्तिका
दक्षि ली रुस्मिन् वाम रुस्मिन् व
स्वर्ग न॥ नील भद्रा रु निरु
य श्रुत्वा जं न मा म्य रुं॥

श्रुग न्यादि॥

यश्चिमा न न धी कल स यूजा॥
गा य ग्री म कु ला॥ नि नी क ला॥
ॐ न त्वा जा मि॥ आ स न॥
ॐ द व स्य त्वा॥ श्रु क्क द ला॥
धी क्क ग्रा य २॥ ॐ वृ रु स्य न ग्
॥ य ना का य २॥ ॐ श्रु स्मा क मि
द॥ आ ना॥ य द्वा य वि स्मिः
गा न्द वी॥ नी ला न्य ल द ल य
रा॥ सि न्द्र न य द्वा रु क्क ३३
का नि थो रु न र्सी स्मि ना॥
धी मू र्क य २॥ ॐ धी श्व न त
क्षी॥ श्रु वा रु ना दि॥ धू य दी
य रु त न य य॥ य नि षा ॥
ॐ म ना जा नि॥ जा य॥ स्मा ग्रा
म क ना न्नी स्मि ना॥ द वी॥ ला क ग्
य स्र यू जि ना॥ सि न्द्र लो न्य
ल या नि स्मि धी द वी य न मा
श्रु ॥ श्रु ग न न्या दि॥

यश्चिमे द दि ल त क्षी क ल स॥
गा य ग्री म कु ला॥ नि नि क ला॥
ॐ न त्वा जा मि॥ आ स न॥
ॐ द व स्य त्वा॥ श्रु क्क द ला॥
ल क्षी क्क ग्रा य २॥ ॐ वृ रु स्य न
॥ य ना का य॥ ॐ ॐ द्वा श्रु सा
ना॥ आ ना॥ य द्वा स्मि ना॥ द वी॥
सू द्वा रु टि क स त्रि रुं॥ श्रु क्क
द ये ल रु क्क ३३ य न यो न य
व य द्वा॥ ॐ ल क्षी मू र्क य २॥
ॐ श्रु मा ल दी व॥ श्रु वा रु ना
दि॥ धू य दी य रु त न य य॥
य नि षा॥ ॐ म ना जा नि॥ जाः
य॥ स्मा ग्रा॥ कू र्म यी न स्रु वाः
सी ना॥ रु खा न कू मू द्वा य मा॥
य द्वा द ये न र्सी यू का॥ ल क्षी
द वी न मा श्रु ॥ श्रु ग न न्या
दि॥

वा य् यो द दि ल क्क ग्क ल स॥

गायत्री मन्त्रे ला॥ नी नी कर्णी॥
 हुं नत्वा कामि॥ आसना॥
 हुं दवस्य स्वा॥ अस्त्र दर्णी॥
 कृष्णाय श॥ हुं वरुस्य न॥
 यना काय श॥ हुं अस्मा कमि
 दु॥ आना कया तमा ता रुत
 र्णी स्वदा न का शरु रु कौ॥
 नक्षिर्न सर्वे कर्मा निक्षेप
 यालं य यू कथना॥ हुं कृष्ण
 याल मूर्ते य श॥ हुं अथेन
 नक्षेवि॥ आ वारु नादि॥
 धूय दी य रुता॥ नव श॥
 यनिष्ठा॥ हुं मना जानि॥
 जाय॥ कृष्ण॥ सत्येय क्लायः
 वीना म॥ कया ता वनि रुषि
 नी॥ स्वप्न रुट क ख द्वा मं द
 प्रया ले न मा श्रुं॥ अग्नि
 आदि॥
 वायू श्रु यूर्ध्व ग ल य नि कत स॥

गायत्री मन्त्रे ला॥ नी नी कर्णी॥
 हुं नत्वा कामि॥ आसना॥
 हुं दवस्य स्वा॥ अस्त्र दर्णी॥
 कृष्णाय श॥ हुं वरुस्य न॥
 यना काय श॥ हुं ॐ नृ आसा
 ना॥ आना॥ ग जान नम कद
 नं यय ना ल द सा य म॥ व
 उरु का ख द न श्रु त श्रु
 क ४ य न धु वा नि र्णी॥ ना ग
 य क्लाय वी नी व विधि ना
 जान मा श्रुं॥ हुं ग ल य नि
 मूर्ते स्वा॥ श॥ हुं आ रु न ॐ
 नृ॥ आ वारु नादि॥ धूय दी
 य रुता॥ नव श॥ यनिष्ठा॥
 हुं मना जानि॥ जाय॥ कृष्ण
 ॥ सर्वे कार्येषु कर्तुं श्रीं सः
 वे विधि नि वा न र्णी विधि
 रु नं ग ल स श्रु मूखा नृ
 न मा श्रुं॥ अग्नि आदि॥

[illegible]

ॐ नमो जामि॥ श्रीसुन॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यना का य २॥ ॐ नृणां कमि

॥ श्रीना॥ कूंकुमाबूढय

रायि भूकयसु कथात्रिल

१। सर्वे सामुविद रुध्रः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अथ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री वारुणादा पूज्यदाय
नमः ॥ प्रसादाय ॥ यति सा ॥

रुत्तानि श्रुत्या प्रणिताः
समाप्त्यतिः समाप्त्यतिः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ स्वं वल्लु वल्लु सको स, यू स

काश्चकगदयासबन्धु

विद्यारुक्म. गु. रू. द. व. न. म.

मयूरं॥ शृंग-आदि॥

शिवशक्ति कलयूग॥

आसंकृत्या॥ श्रुत्य या प्रयू

ॐ॥ गायत्री मन्त्रे ॥ निरी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ना ॐ द वस्य त्वा ॥ अथ द

॥ ॐ वषासनाय ॥ ॐ मि

॥ दद्यादि ॥

वर्णाग्नियजनं ॥ मूलनय ॥ ॐ

जांवा माय नमः ॐ ह्रीं क्लीं

थनम॥ ॐ कौ नो ज्ञायनम॥ ॐ द

काल्यनमः॥ॐ॥कावलविकल
नमः॥ॐ॥कावलविकलनमः॥

ॐ कांवल्लभसथनीनमः॥ ॐ कांवल्लभ

हृत्तदमन्यनमः॥ धृष्ट्यादायानाकन
धर्मादिना ५ ॥ वद ॥ नमः॥ गाय

ॐ या त व द म ॥ ॥ ध्या न ॥ ॐ सू र्य

कादियुक्तिकां यत्तयावृद्धनिधनं
सर्वं यत्तयावृद्धनिधनं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

संघ नं॥ रुगलिङ्गसमायोगं विदध

निर्गमसूदयाः शुशुभनयुः।। तत्कृतं द
दोमयाः तत्कृतं तत्कृतं तत्कृतं तत्कृतं तत्कृतं

मूषि नावर्द्धनीस्य संतु। कृत्स्नस्य मखेन

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥

ज्ञानसमस्तस्य ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमः स ॥ श्री वा रु नादि ॥
 कृ स न य वि सु न र्णा ॥
 ॐ
 स रु ना ॥ धू यः दी यः रु त्ना ॥
 न व श ॥ य नि ष ॥ ॐ म नो ज र
 नि ॥ जा य ॥ स्ना ग ॥ नि व र्णा कि
 स नू या यः स र्वे ला क रि ना
 य या र्व दी र्घ या द यू ग्मा य
 न मा मु वि स्व मू लि न ॥ श्रीः
 ग ग आ दि ॥

श्री दि त्य क ल यू जा ॥
 गायत्री म नु षा ॥ नि ग्री द र्णा ॥
 ॐ न त्वा जा मि ॥ श्री स न ॥
 ॐ द व स्य त्वा ॥ श्री र्क्ष द र्णा ॥
 दा त्रा र्वे षा ॥ ॐ दा त्रा द वी ॥
 गो व र्णा य ॥ ॐ व त्वा नि श

गा ॥ ग व य न य ॥ ॐ श्री रु
 न ॥ ॐ द ॥ द र्मा य ॥ ॐ जा
 न व द स ॥ श्री का सा य ॥
 ॐ उ रु वि व र्णा वा य र्व ॥
 ॐ द र्मा य ॥ श्री रु
 कू मा ना य ॥ ॐ श्री ना नि
 य रि ॥ श्री ना य द्वा स न य
 द क व ॥ य द्वा ग र्मा स म दि मि
 स का र्वे प य स र्वे व ॥ दि
 उ क र्मा स द व वि ॥ श्री दि
 र्मा य ॥ ॐ द र्मा य श्री वि व र्व
 दि द व ना य ॥ ॐ श्री रु र्व
 र्मा दि ॥ ॐ श्री वा रु नादि ॥
 कृ स न य वि सु न र्णा ॥ ॐ क य
 न वि व ॥ धू यः दी यः रु त्ना ॥
 न व श ॥ य नि ष ॥ ॐ म नो ज र
 नि ॥ जा य ॥ स्ना ग ॥ क लि द र्व
 स र्वे रु नं वि सा म स क र्वे रु व
 ॥ न क य द्वा क व द र्व नो मि

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री वा रु नादि ॥ कृ स न य वि सु न र्णा ॥ ॐ क य न वि व ॥ धू यः दी यः रु त्ना ॥ न व श ॥ य नि ष ॥ ॐ म नो ज र नि ॥ जा य ॥ स्ना ग ॥ क लि द र्व स र्वे रु नं वि सा म स क र्वे रु व ॥ न क य द्वा क व द र्व नो मि

शुद्धि सप्तमं ॥ शुद्धि आदि
॥

नागकुंरुयुजनं ॥

उं नत्वाजामि ॥ आसनं ॥

उं दवस्यत्वा ॥ शुद्धि आदि ॥

आनं ॥ शुद्धि सुटिका संकासं

वनदं यदा यदा गिला रुद्रासं

फविशुषाई ॥ आयन कुं

गाभिर्यं ॥ उं नूनकादिमू

रुथ २ ॥ उं नमा सुसर्पेया

॥ आवा रुनादि ॥ धूय दीय रुत

नवेय ॥ यगिष्ठा ॥ उं मना

जानि ॥ जाय ॥ स्तोत्र ॥ रुं

गमलि नूडाश ॥ नाना नत्वा

विशुषाई ॥ विषका लावकी

धूय ॥ नत्वा नागा यवे नम ॥

शुद्धि आदि ॥

ऊक्षणी ऊक्षयुजनं ॥

नत्वाजामि ॥ आसनं ॥ उं

दवस्यत्वा ॥ शुद्धि आदि ॥

आनं ॥ उं यी नवकुं मरुका

यं ॥ वी ऊयु नत्वा आनिर्वा ॥

रुमा लंका नत्वा र्ग ॥ अन

या ययनिय ॥ शुद्धि मवकुं

मरुका नत्वा सर्वो लंका नत्वा

हिर्वा ॥ नत्वा वकुं प्रकलसं

ऊक्षणे वनमा मरुका ॥ उं ऊ

क्षणी ॥ ऊक्ष नम ॥

उं शुद्धि शुद्ध वद ॥ उं शु

क्षणी ॥ शुद्ध दीय रुत

॥ नवेय ॥ यगिष्ठा ॥ उं मना

जानि ॥ जाय ॥ स्तोत्र ॥ रुं

नत्वा वली यूकं मरुका क

लत्वा रुर्वा ॥ गदायानि मरुका

यर्वा ॥ यनमा मिथ नाधिर्यं ॥

दिश वकुं यगिष्ठा नत्वा सर्वो

लंका नत्वा यिर्वा ॥ नत्वा मिर्वा

क्षणी दवी ॥ सर्वे संयति ॥

दायिनी ॥ शुद्धि आदि ॥

१ मयप्रभुमकुलनिप्रिकुली॥४॥

धीलक्ष्मीपूजनं॥ न्यासा
हुं गत्वा कामि॥ आसना
हुं देवस्य त्वा॥ अस्मद्वर्णा
श्चाना॥ यथायनिस्तिगादे
वीनीता॥ त्यक्तदलप्रहरी
॥ लिङ्गनयनरुसं वका
नियोवन संस्तिगा॥ य
था स नस्तिगादवी
हुं अस्मद्वर्णा॥ कसं निरु॥
अकुदयेन रुसं वधन
अन्यवन यदा॥ धीलः
क्षीमूर्त्तिश॥ धीश्वरत
क्षी॥ हुं शामा ले॥ अवा
रुनादि॥ भूय दीयरुत
नयथा॥ यनिष्ठा॥ हुं म
ना आति॥ जाया॥ रुगु॥
यलमासिमयादवी धी
मस्य प्रलदायिकी॥

यस्तु मङ्गलकाशे भूनि
स्थायथायतस्थिर्ग॥ येहा
स्तवदिगादवी सर्वत
क्षीयदायिका॥ यनमामि
सदादवी तक्षीनामारु
विधिया॥ अग्रगन्थादि॥

मृष्टरूपयकलसार्चनी
गायत्रिमकुला निनीः
दली॥ हुं गत्वा कामि॥ आ
सना॥ देवस्य त्वा॥ अस्मद्वर्णा
द्वर्णा॥ दायाश॥ हुं दा
यादवी॥ अना॥ कूदः
कमूदसंकासं वधुमधु
तमश्चर्गा॥ प्रथा लोवन
मकार्यं मृत्युश्च
विरावयन॥ मृष्टरूप
यथा भूमती चत्राय॥
हुं पूनत्वादिथा॥

ॐ ॐ मंदवां श्री श्रुतल
 क्षी॥ अस्वस्त्यवाद्यादि ८॥
 यूजन॥ वेदनसरिग॥
 आवारुन॥ धूपदीप, रु
 त॥ नवश॥ युतिछा॥
 ॐ मनाजागि॥ जाया॥ स्म
 ग॥ सथायसथयुजथा
 दधदिन्दुविम्वकुम्भं
 रुनिस्समग्रमधुग्रः
 नाविश॥ अकथियाश्च
 यवदा रुयया निवधा
 मृत्वां जथा जयसौमिकु
 निसाकवस्त्रं ८॥
 अग्रगन्थादि॥

* मूर्तिकलसपूजा *
 जथा देवा नूकभन
 थलु लिपूजा॥ गलय
 ति॥ ॐ नमो गलेशा॥
 गगना॥ ॐ श्री गंगे

य॥ कामात्री॥
 ॐ जानवेदस॥
 वलियूजा॥ ॐ गनानीः
 स्त्री॥ ॐ जानवेद॥ ॐः
 ॐ मातृदाया॥ ॐ धर्मः
 धर्म॥ ॐ नमो वसू॥ ॐ
 अस्तंताग॥ ॐ यात्रेदि
 स॥ धूप, दीप, रुत॥
 नवश॥ युतिछा॥
 जाय॥ स्मग॥ अर्थय
 दासाधनं रुता॥ ॐ था
 गथागसुव॥ ॐ यवि
 वस्त्रं॥ यवि वस्त्रं दन॥
 ॐ विष्णु वस्त्रं॥ यवि
 वस्त्रं॥ ॐ यस्त्रं यगु॥
 ॐ समूदायूमि॥ ॐ द
 वीवाथी॥ ॐ यथा ॐ
 द्या॥ ॐ सवि वस्त्रं॥
 ॐ देवाय वक्रमन॥

ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥

तथा यत्रिड लूखलं निधाय ॥५॥

अथियनीतमश्चक'शा॥

शुभ दशक्रिया॥

ॐ प्रत्यक्षगुणः॥

ॐ सकल श्रीजिह्वा क

ॐ महीनायथासि॥

॥ नमो ॥ ॐ स्वस्ति नमो ॥ ॐ ॥

व नू सा ध नौं उं वा न्य म सि

ॐ ह्रीं मां ह्रीं ॥

॥ॐ कू कशसि ॥ॐ यना

ॐ या नमो नमः ।

यूग ८॥ ॐ हूं श्रीं ॥

ॐ वक्रयज्ञो नमः॥

ॐ श्रीगुरुग॥ ॐ नमोऽय

यं वगश्च नरुय ॥

॥ॐ नमो नमिदु॥

ॐ नमः शिवाय ॥

ॐ दवस्य स्वा॥ ॐ हूँ

ॐ शिवाय स्वाहा॥

ता श ॥ ॐ सति उर्व ॥

ॐ यविगुह ॥

ॐ नमोऽसि ह्यु॥ ॐ य विः

ॐ ह्रीं जा बनी ॥

ॐ ॥ यू र्वे व त्सं स्का व ॥

ॐ त्रिगुण्यनां॥

ॐ दवी गायो ॥ ॐ रुक्मः

ॐ निक्रमर्षनिव॥

स्याकन॥ॐ शुद्धि शेष॥

श्रवणा श्रुति ॥

सद्यविप्रश्न ॥ ॥ नख

ॐ का य स्वाहा ॥ कस्मै२

३॥विष्णवे नमः॥

॥ क न म स्मै २ ॥ श्री मा जी

ॐ नमो नमो ॐ विष्णवे

नायशा मशे दिने मर

नवा टा॥ ॐ श्री गणेशाय ॥

ॐ काये १ स न स्वये २॥

ॐ धृवसि धूर्ध्व॥

याव काये सव सखे १

वृक्षे, वृक्षे, वृक्षे नर्त
मियाय लक्ष्मि, लक्ष्मि कुनी
याय, लक्ष्मि पूनू याय,
विष्णु, विष्णु वनिरूपा
य विष्णु वसिष्ठ विष्णु
स्वारा॥ यथाय वस्य नाम
॥ रुद्रासन ॥

ॐ कारु लिनी॥

शून्यासाय १॥ शून्यग
॥ कर्णरुद्राय स्वाहा॥ ॐ
रुद्रं कर्णरुद्रि॥

वृज कर्णय स्वाहा॥

ॐ मूढान् दिवा॥

वृगर्वथाय १॥ ॐ वृगर्वथाय
॥

समावरुनाय॥ ॐ शूरक
विवाहाय, ॐ प्रियंवदी॥

यमनाजायाय, ॐ कागला
ॐ ग॥ आन॥ मखावूर॥

ॐ समिधागि॥

ॐ नंदवागि सु॥

नर्वडौकावा॥

नर्वडौकावा॥

प्रिस्वीजे नर्वसेवका

युद्धा॥ मनयजायन

यस्वारा॥ मरुआकृति

॥ ३॥ ॐ समीसाव॥

ॐ ॐ रुद्राय ॥ ॐ रुद्राय १

शुभाभियनय १॥

नगाय जायनिदवता॥

मानसंविद्य॥ वक्रायली

न॥ वेदः लाकयात॥

पूनरुममृदवाचला॥

प्रियश्वाय॥ वडयश्वा

य १॥ दवागाडुव॥

दिसेनम॥ विदिसेनम॥

स्वर्गाय॥ मर्याय॥

यानाताय॥ एमेये॥

त्रिकाय १॥

पूर्व नमः ॥

ॐ ह्रीं श्रीमित्रिकाय

वदन्त्याये १॥ ॐ ह्रीं

नमः ॥ ॥ श्रीमन्

यद्विज्ञा कृदनी ॥ ॥

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

नियुक्तं कुरुते ॥ वि

दधमाह नवका कुरु

कुरुते वदन्त्याये ॥

शान्तिं कुरुते वदन्त्याये

शान्तिं कुरुते वदन्त्याये

जिज्ञासकुरुते वदन्त्याये

वदन्त्याये सर्वकामदा

॥ ॥ कुरुते वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

शुद्धं कुरुते कुरुते

नमः सर्वकुरुते वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

ॐ सफरन्त्याये ॥ ॥

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

वदन्त्याये वदन्त्याये

अथ यत्तु कृतं ॥
 अथ दाया ॥ यथि शो ॥
 अथ यत्तु ॥ बुद्धि ॥
 अथ जायतं ॥ दवे ॥
 अथि ॥ कृदा ॥
 सदा ॥ भव ॥
 अथ सत्यं ॥ अथ नमः ॥
 अथ वैदाया ॥ वायु ॥

शुद्धी दाय॥ वक्र (१५)
दि॥

सामवेदाय॥ दिवे॥
सूक्त्याय॥ वक्त्रादि॥

श्रुधर्ववदाय॥दिग्गुह्य॥
वन्दमस॥ब्रह्म (व) श्यादि॥

ॐ ह्रस्वा ह्रा ॥ ॐ हुव स्वा ह्रा ॥
 ॐ स्व स्वा ह्रा ॥ ॐ ख ना ग्रा
 (ग्रा ॥ ॐ दमयि सा मा ह्रा ॥
 ॐ स ख ना ग्रा (ग्रा ॥
 ॐ दमयि व कृष्णा ह्रा ॥
 ॐ ग्रा ध्या (ग्रा ॥
 ॐ दमाया वा (ग्रा ॥
 ॐ शे न स र्ग ॥ ॐ द व नू
 क्षय स वि प्र नि ध्व क र्म
 (ल वि (ध्व श्वा द व श्वा म नू
 स्र ४ न के य ४ ॥ ॐ उ दू त म

य नू॥ ॐ दं व नू ला या दि
नया॥ ग ल य नि दू गो द
य ना कू नि वि थ॥
स म स स वि थ॥
य ना कू नि यू लो या य॥
ॐ स क न गू य॥

वी हि या य य न य न॥
ॐ य ल र ० न द॥
ऊ व शू द न गि ल
वि थि थं य ऊ मा न न
न य क॥ यू लो या य ऊ
य न य॥ य ऊ मा न य
ला हा नि न थि य क॥
ॐ ॐ द ० रु वि॥
शू वो यो या नं स वी ल क
ले ड य द म यो न॥ यो यो

शू कू नि सं क ल्य या य॥
ग ल य नि॥ य नू॥ दू गो

व का य नी क॥ न यु वं दा
य॥ य शू र्वे दा य॥ स म व
दा य॥ शू थ र्वे दा य॥
ॐ द्या य॥ शू य थ॥
य मा य॥ न म ला य व न
ला य॥ वा य व॥ कू र्व या
य ॐ ला ना य॥ शू न का य
व क ला॥ य थ शू य थ॥

यू र्वे दा य॥
सा नि ना न ला य॥ शु म द
ल दा ना य॥ शु ला का य॥
रु न शू म य॥ अ यु वे दा य॥
न दि न रा॥ म ही का ना य २॥
ॐ द्या य॥ ॐ ना ना न मि द्य॥
नू डा दि कू य या ला॥
कू उ क कू य या ला य॥

शू य थे ला ला॥
ॐ शू मि मू यो॥ वि यू ना क

शुभ॥

॥

दाक्षिणादान॥

कुमिता नलाया॥

सुलोकाया॥ शुभायुगाया॥

ऊरुधेदाया॥

ऊमाया॥

ऊं ऊमै नदरुं॥

शुभायि शुभाया॥

शुभिवतालाया॥ नेमया॥

ऊं ऊनदवी॥ वधु वसारा

॥ ऊं वधु शुभ॥ शुभजिदा

शुभ॥

॥

यश्चिमदाव॥

निर्वहिका नलाया॥

कला नदागाया॥

ऊनलाकाया॥ दानयुगाय

सामवेदाया॥

श्री स्वाहा॥ लक्ष्मी स्वाहा॥

व नूलाया॥ ऊं नूलाय॥

शुभायि शुभाया॥

कालाशा यशु॥

वायवस्वारा॥ ऊं नववायु॥

गलयनय॥ ऊं गनो नात्वा॥

शुभयालाया॥ ऊं शुभेना न

ला॥ कालवूयशु॥

ऊरु नदागा॥

शुभाऊमा नलाया॥

धुरुडा दानाया॥

सुलोकाया॥ कलिरुगाया॥

शुधवे दाया॥ दानियस्वा

हा॥ दानियस्वारा॥ कू न

लायस्वारा॥ ऊं कू विदरुं

गे॥ यिसा व श्रुया॥

न कंया द श्रुया॥

श्री नाना यस्वारा॥

ऊं श्री स्वाहा॥

यु नूवे सारु॥
ॐ वक्क जक्काना॥ सीम नूय
क्षणा॥

गृहाधियनय॥
ॐ त्रिलियदा॥
उद्वाधियनय॥ ॐ वक्क
लस्यन॥

निवर्तकि यार्न॥
निवायविक्रव॥
ॐ विक्रव नार्त॥
लकायलक्षी॥
ॐ श्रीधनलक्षी॥

श्रादि सारु॥
ॐ श्रा रुक्म॥ नागवा जा
य॥ ॐ नमा सुसर्ग॥
यकाय सारु॥ ॐ श्रीगृ
क॥ ऊ कली सारु॥
ॐ यना ऊ कल॥

दीये सारु॥ श्रीधनलक्षी॥
लक्षी सारु॥ ॐ श्यामालक्षी॥

मूर्ख श्रयाय॥
ॐ ॐ मंदवा॥
गमथलि क्रयार्न॥
ॐ निवा नामासि॥

यथा दव नू क्रमनः
था लुहियार्न॥ धुयानो
ययार्न॥ ॐ जा ॐ मवा॥
समस्त कनसयार्न कृजा
यविया॥

कलसप्रनिष्ठा॥
ॐ श्राजिद्य कलसं॥
संका कृति॥ ॐ श्रीसंकागा॥

दवर्त साय मूल दानसा॥
मधुयथाः कृयानयिः व
कृत्तिका नसः व वाकि सद्य

ॐ नमः ॥ यू च ॥ नव ॥ लु
 नाग वा कथा नमः
 शा नमः ॥ यशः ॥
 ॐ समुद्र कथा ॥ दधि ॥
 ॥ रुक्म वल्ग नाग वा कथा ॥
 ॥ दधिसमुद्रा यशः ॥
 ॐ समुद्रा यथा वा नायय
 शिभा ॥ खन वल्ग नाग वा
 कथा ॥ ॐ दधिसमुद्रा यो
 ॐ समुद्रा दूर्मिर्मोक्ष ॥
 ॐ रुक्म ॥ यीत वल्ग नाग
 वा कथा ॥ गहो दक स
 मुद्रा यशः ॥ ॐ समुद्र नमः ॥
 मृत्तिका यूजा ॥ ॐ याडाः
 यधी यूवा ॥

देवगु कथा ॥ देव क
 गनाथ सुष्टिसंरु नका
 का ॥ नमो नो य नम या देव
 हदीया मूरधन सा ॥ न्यू
 नाग लो ला वि कां ला

इति सप्तमः पदः ॥ दधिसमुद्रा यो
 ती मार्ग सुदीप्तो जय मादईव
 हा राजवीर सिंहे श्रीगह्वर
 लाई चो हाई दिग्ग

आभा नर कथि
 2095 I



वा. यं (ग) वा वि क ल क वि
न। यं (उ) म रु सि न स र्वे स
यू र्क स र्वे न र व॥
नि र्थि दा म न्नि र्क व उ॥
य ज मा न र्थि ल र व द य
क॥ नि ल उ य न न॥
ॐ न त्वा ज मि॥ ग रु द
न म र्हि का॥ ॐ र म (ग्र
द॥ द वि का ट॥ वा ली का॥
ॐ श्र यो द वी म धू म ती॥
दा॥ मू न॥ या न न न॥
ॐ मू व रु न नि॥ व नि ण॥
ना रु द न॥ ॐ ना रु न म
ध॥ रु य नि का॥ य र्वे न
य॥ ॐ द वी वा या श्र (ग्र मू
॥ मू रु हा स॥ (ग) रु म॥
ॐ श्र यं (गो) वृ॥ का ना गि
नि॥ स मि ध मू त॥ ॐ व न
व र्हा र्क॥ व न र्हा॥ ग म म

हि का॥ ॐ श्र यं (गो) वृ॥
य या गा॥ रु न ध या॥
ॐ र व ज्ञा वे ध द व ४ श्र रु
क ४ क (र्क) ग रु स न रु रु
न रु सा मि टा रु क न ४
सि ० रु मा वृ न ४ रु क ला
स ४ यि य का स कू नि रु रु
न श्रा ये वि र्थि द वा नी
य व न ४॥ सा ग न र्हा॥
ॐ श्र यं (गो) वि कू रु रु
या॥ ॐ वि कू रु न र ट॥
वि व रु रु या॥ ॐ नि वी न
मा सि॥
कू सा द क॥ ॐ व रु रु रु रु
॥ व रु रु रु रु रु रु रु रु
श्र या॥ यू या द क॥ ॐ रु रु
श्र मी नि॥ रु रु रु रु रु रु
ॐ या रु रु नी॥ ग रु रु रु रु
क॥ ॐ दी यो य रु रु॥

गन्धदक॥ॐ गन्धदा ना॥
श्रुष्टादक॥ॐ ॐ दमायया॥
गंगातखा॥ॐ ॐ ममगङ्गा॥
यश्शमृगनसना ना॥
ॐ यययथिथा ॐ
श्रुष्टादक॥ॐ नस्यनमवि
ग॥यश्शगश॥ॐ यविश
ह॥ॐ दक॥ॐ यश्शन
शना॥यूवेकलस॥
ॐ समुदं ऊ॥
दक्षिणकलस॥
ॐ समुद्रायत्ता वा ना॥
यन्निमकलस॥ॐ समुद्रा
रुमा॥ॐ रुवकलस॥
ॐ समुद्रन॥सरुध्राना॥
ॐ वसायविश॥
दिष्टि विशक॥ॐ ननव
शानवदनादि॥श्रीगीर्वा
दा॥श्रीवशि॥देवविसेज
ना॥ॐ उतिष्ठ ना जसास
रुपी तालिय श्रुवेवय ४

सममिद्वयमृत्तनम्॥
यजमानस्य देवता कावः
वाक्कलस्य॥सा सातावः
मधुयस्य नेमयदान ल
द्वन॥धधित्तस्य रुनः
ययासन उयवित्त॥
यीशिकास्तयन॥
ॐ श्रीनारुद्रा॥देवस्तय
ना॥ॐ नमसस्त्ववाय
श्रुत्यसस्तयनगृहाय
कननानि॥ॐ वायशेवा॥
निद्राकलसस्तयन॥
निद्रायान श्रीकृति॥
वाकृतिना श्रीशुक्लास्त
यदेवटीश्री॥
नारि संभानदेवः १३
सूदनवेत्तदेव १४॥
ॐ रुसाहा॥ॐ वदना
यादा॥ॐ रुवसाहा॥
ॐ विष्णव॥नारि॥
ॐ ऊ॥६ स्वाहा॥ॐ नमः

॥ नि न ॥ ॐ श्री सग स्वा य व
क्र (ल न म ॥ ॐ श्री विद्याग
स्वा य विष् न म ॥

ॐ दू गि व न स्वा य नू द्रा य
न म ॥ थ न म नु ल ताम वि
ता म न सा ध य ॥

॥ श्री दू गि थ म नु ल था न २
स ध्र वा न थि थि य न श न
॥ द व नि द्रा क ले सा र्क द ॥
ॐ स म द द द्या ॥ नि द्रा का
य उ द्वा ले द व स क ॥

॥ द व द ध क्रि या या य श ॥
ॐ ॐ स्वा ला ॥ ॐ द ग स
या नि ॥ या नि क र्प ॥
ॐ ॐ स्वा ला ॥ ॐ ग र्हा श्र ॥
ग र्हा ना ॥ ॐ रू व स्वा ला ॥
ॐ स सि न ॥ ॐ ध्र व व ॥
ॐ स्वा ला ॥ ॐ मा हि रू
मो ॥ नी म न ॥ ॐ स वि उ २

ॐ या ला य स्वा ला ॥
जा न क र्म ॥ का य उ द्वा ले ॥

म ना श्र य क ॥

ॐ व न व २ ॥ ॐ व क य रु
॥ नि कृ म ल ॥ ॐ रु (गो द

२ ॥ ॐ का य स्वा ला ॥

ना म क र्क ॥ ॐ स्व धी म हि
२ ॥ ॐ या रु त नी ॥ रु त य
स ॥ ॐ धि वा जा न २ ॥

ॐ श्र न य न ॥ श्र न या स ॥
स य टि नि ॥ व नू द व न ॥

ॐ य वा द या न २ ॥ ॐ रु द
क र्क ॥ क र्क रु द ॥

ॐ स वि उ २ ॥

ॐ मू द्रो न दि ॥ वू ग क
रु ॥ वा क रु नि न रु य ॥

ॐ व न व २ ॥ ॐ व न रु
रु क ॥ व न व ध न ॥

म य वी मू ल म नु य द
नी ॥ य वा द क र्क ॥

ॐ रुगोदव २॥
ॐ वननदी का॥ दी का॥
ॐ सधिमहि २॥
ॐ आरु ॥ समावर्तन॥
ॐ धिया जान॥ ॐ धिय
वर्क॥ विवाहा॥ सनवृद्ध
का॥ रुनिन॥ वंदाव वल्लभा
या॥ श्रुनिनिनदाया॥
हासानगायक॥
ॐ प्रबोधयान् २॥
ॐ को गान्॥ जाग्रा॥
यथादवस्यमूलमनु ७ जी
व न्यास दक्ष राग जीव॥
न करारागदवस्य नवरा
गस जीव॥ आरुतिविश
मनु ७ १०॥ ॐ यूना कुन
सा॥ आरुति॥
ॐ वावक स॥ यश्चरुन
सधना॥ ॐ मनस आ॥
यश्चरुनस्य १०॥

यूजन श्रमकु ७॥ आरुति
विश॥ ॐ आरु ॥ न॥
आरुति॥
ॐ ति जीव न्यास दवस्य॥
ॐ रुविद्यादिसकवर्थन॥
तिलादुतिमनु ७॥
उस्वाहा॥ या ७॥
उस्वाहा॥ जान्॥
सस्वाहा॥ यु ७॥
मरुस्वाहा॥ नारि॥
जनस्वाहा॥ क ७॥
सर्पस्वाहा॥ नि ७॥
ॐ सकजय ॥ आरुति
॥ सकप्रय न्यास॥
ॐ को ददया य २॥
ॐ ऊजा यन॥
ॐ ऊजा नस ॥
ॐ सरुमसी॥
ॐ दूतिस्वायवा॥

ॐ श्रीगुरुः सं॥ ॐ कं वा व
वा यदं॥ ॐ श्री गुरुसि॥
ॐ कं नया य व वट्॥
ॐ वि शार॥ ॐ कं १ गुरु
य रुट्॥ ॐ निम स्या॥
॥ ॐ नि ष ग न या स द व
सा॥ ॥

द वा च न मूल म नु ल कू
शो न॥ दा द न व द न द
वा वि स ख न यू जा॥
गुरु नि मूल म नु ल १०८॥
ॐ पूर्वो द वि॥ द व यू लू
॥ कि ना कू नि वि थ रु नी॥
ॐ कि ना रु व वी रु न श्री
गुरु व वा श्र व न॥ गुरु
रु व स म द स्त मे मे (ग १
यू जी म वा रु टा॥ गुरु कू नि
॥ द व टा थि स्थि य रु य वा कू॥
स्थि ग कू व उ द व र्ण द वा
ना म थि था रु म । या व च द्या

कामेदि न्या गा व र्ण गुरुः
ला रु॥ नि वि र्ण की य न
ना यिः स दा क ल्या न सं रु
वा श्री गुरु स्थि क न नि स्थि
स दा स्थि नि रु ल कू नू॥
न व मा नि श्र द रु र्ण कू
न वा ग म नि क रु व नू॥
ना वा कू रु य र्ण न श्र
य न व क रु य न था॥
ॐ रु क म रु व रु गीः
य न व व वि र्ण ग ति॥
य क मा न स्थ ग रु म रुः
॥ ल स्मि न॥ या
व च द्या कामेदि नि ना
व र्ण स्थि ना रु व॥ गुरु
क म न द व य नि क्का या
य रु नी॥ गुरु नि मूल
म नु ल १०८॥ ॐ म न रु
नि॥ य नि क्का॥ ला जी न॥

ब्राह्मण ॥ देववलि
विश्वक श्रवादन ॥ वलि
यानं श्रुति ॥ ॐ श्रुतं
ना ॥

शान्ति कः योष्टिक ॥
ॐ शोभानि न ॥ शान्ति क ॥
ॐ प्रियं वरं ॥ योष्टिक ॥

जयः आश्रितं समि
ध ॥ युगदना ॥ वेत्तु
ल ॥ द ॥ आदनं ॥ वदनी
रुल ॥ प्रियं यु ॥ शुभं
सतयुष्य ॥ स्वगतिल ॥

रुक्तिल ॥ नक्तिल ॥
प्रियं यु ॥ प्रियं ल ॥

नृपकं न ॥ यदकं न
॥ वन्दनं यु ॥ युगुल ॥

सर्वदायधी ॥ कन्या ॥ मू
ल ॥ रुल ॥ यका न ॥ ॐ
॥ द ॥ द ॥ यय ॥ श्रु

रुनसं ॥ रुया न ॥
ब्राह्मण ॥ श्रुतं ॥

दिगा वैला ॥ वलि पूजा ॥
युगदीय वलि का ॥
श्रुतं नसं ॥ रुया न ॥
ॐ अजं वा वय ॥ ॐ ॥

सक्त ॥ यला डय ॥

ॐ लेना श्रु ॥

ॐ श्रुया श्रु ॥

ॐ ऊनं सनं ॥ ॐ उदुलमं

॥ ॐ यारि ना श्रु ॥

यारि ना विस ॥ यरु यारि
विरु ॥ सर्वयारि सन ॥

नूनादि नक्त ॥ श्रुति न
कं रुला ॥ श्रुना कानं नना

॥ वैश्वानना यवि ॥ दय क
तसेना ॥ मनश्च रुन ॥

यि रुन सनसा ॥

सनस ॥ नसा व ॥

यश्रु रुमदा व ॥ स्वति

न ॥ यु ॥ यययुथि यो ॥

विष्णु वराटम ॥ श्रुति दव

ता व ॥ शोभानि नतयि ॥

नामि स, कर्म श्रुतयनः
वलि यदा नयाथ श्रुः
नू क्रम ॥ हानानवि य ॥
धनं धूनकाव ॥ हाना, य
ऊमानया लनयाथ ॥

१. ॐ कथानवि ॥ यथश्रुति ॥ १३
विमर्श ॥ सति यागसा न ॥
निश्चकर्मोदवा च न ॥
यूवेनगू, यूवेदा ना दिः
यूऊनै कू यो नू ॥ दवचन
॥ वलि यूजा ॥ धूय, दीय ॥
यति छा ॥ सिंहा स नै उ यः
वि स्य ॥ श्रु दूति ॥ गलयति
॥ दूग्रादि ॥ समस्त विथः
थियकं माल ॥ दक्षा याट
न ॥ कल स यो नै छा ॥ संका
दूति ॥
विधि (थं य रू धूनकं ॥
दसवलि वि यक ॥ श्रु दूति ॥
ॐ मूर्सं का ना ॥

ऊयमानयति छा ॥ श्रु दूति ॥
ॐ मना दूति ॥ ब्रह्म ल यूजा ॥
लानिक, यष्टिक ॥ ऊवया
यादि ॥ दिगा चै ला ॥ दूतः
दीय दूति का ॥ सर्व वाचं
खाय, दक्षि ला वाचन, दि
गा चै ल, वलिरुन ल ॥

यूजा कू यो ॥ सं सवया स न ॥
तना सं दू दूति ॥
ॐ दवा गा उ विना ॥
श्रु या य स्य ॥ ॐ हि म स्य स्वा ॥
॥ श्रु सि स य ॥ वा न न ऊत
ना ॥ श्रु सि चो द ॥
यून वा यो कू यो नू ॥
ततः य जा यति द वना मो
न स विं स्य व द्वा य ली ना
दि ॥ यून लो म दू द वा च न ॥
कल धा दूति ॥ सं द्वा दूति ॥
ना यो जा ग व ला दि ॥ यथम ॥
॥ दि नि यो दि वि स ॥

न्यासादि॥ दानकलेषु
जन॥ आदुति सर्व॥
दत्ताचार्यन॥ ॥ ॥ ॥
संज्ञादुति॥ मधुयस्वी
भानभानमधुयस्वाने
कावयन॥ कृत्योक्तप्रतिभय
संज्ञादुति॥ वरुहाम॥
नातिकलेनेमयदावति
मिदुनादि॥ यवकायादि॥
दत्तवलि॥ दक्षिणा॥ दत्त
दीयवृत्तिका॥ दिनपूर्व
॥ आसंसा॥ अरिथक॥
आशीयोद॥ ॥ ॥
ननादवस्तु॥ ॐ नमो अस्तिना
यमसायनम॥ दत्ता॥ अश्व
नादयनम॥ अथायनम॥
अनिश्वसवर्गयनम॥
अविनासिननम॥ असदा
एकायनम॥ ॥ ॥ आसं ॥
यूजा॥ वलि॥ अदुति॥
नें दौलीरुववस्तिनारु

स्वारा॥ नें दौली नाथशाय
कारुवस्वारा॥ नें दौली ना
थश्रयभयारुवस्वारा॥ ॥
नें दौली नाथश्रनादिवा
आरुवस्वारा॥ नें दौली ना
थनिस्था रुवस्वारा॥ नें दौली
नाथश्रविनवस्वरा
वस्वारा॥ नें दौली नाथ
रुका रुवस्वारा॥ मूलम
कुलआदुति॥ ॐ ह्रीं नारु
ववी पुंग आधु रुववा अ
वेन॥ यथरुवधुपममय
युनीयवारुनस्वारा॥ लाजा
सरुयुक्त॥ ॥ ननादवावे
नें दौली वत॥ सोमयागा॥ ॥
ननाथजावेभयत॥ वदुत
प्रथजावा॥ शजावेयोरुन
रुत्वा॥ वरुदे आसनमृवा॥
यथाकवलु संयुक्त मूल
वीजसमंविन॥ तदायनि

युः पि नंद व. निधि यु के न
 कर्म लो॥ निर्वो लम नुद वर
 चन॥ नरथ वक्रम लो॥
 यं वसु प्र ल व रु य न॥ स
 र्व स्य श्रा दू ति द शान् ॥ द
 क्षि लो॥ ॐ निवा नामा नि॥
 यू लो॥ ॥ अथ स्ति न हान
 ॥ क न मा मा ल का स्ति क
 सख का वा ॥ क व न शारुं
 दि न य का वा ॥ शारुं दि य
 वा मृ ना दि स्ताना ॥ व न्द ना
 दि यू जा ॥ द क्षि लो नै ॥
 क न मी या दा य रु स धे ला
 हा न स लं ख न हा य ॥ ला
 हा न या य का व ध न न स्व
 स्ति क वा य ॥ ॐ वि श्व क र्म
 ल न म ॥ यू जा ॥ वं द ना
 दि उ जाम का स्ताना ॥ आ
 ना ॐ दि यु जयी न द रु
 कु ज टा या त्री क का सने ॥

वि श्व क र्मा ग दा र गो यो
 क्ता न मू डा श सु प्र रु न् ॥
 व द ॥ ॐ वि श्व क र्मा वि मः
 ४ ना श्रा दि हा या या ना वि वा
 ना य न मा स द्द क ॥ न योः
 वि नि स मि धा म दं ति य व
 स क अ धी नू य न व मा द्द ॥
 जा य ॥ क्ता न ॥ ॐ वि श्व क
 र्मा न म सु र्यं प्रे ला क रुः
 छि का न क षा य धा यू न क
 ला र्थो व वि श्व क र्म न मा
 मु न ॥ अ ग र्ग धा दि ॥ ॥
 द क्षि लो स रु शारुं दि द्द
 या ॥ ॥ अथा र्जु न स्त ॥
 द या वा र्जु व दी द व रु
 क न मी य रु मा न स थि थि
 न ॥ ॐ वा न का था र्थ न ॥
 शारुं दि न थि र्थ न ॥ थ स्ति
 व हा ले ॥ ॐ अ य वा न रु क
 र्थे स्था दि ॥ अ शा दि ॥ य रु

मानसाग्रही ३ अथागवन्
नसदागिव रुदा नक सस
तु कानलक्ष जो वनोरु नदि
वारु वडाहि वयनिष्ठावा
आउं यनिना सिधवेल स
यनिष्ठा रुव वयं ॥ सानिधं
यनियर्थं तं ऊऊमानासु
वद्ध यन् ॥ सनोश्कुदियद
निर्णयनोश्कु ववतुष्यद
लनोश्कु सर्वलाका नां
नोवा क्ली तं वव ॥ यऊ
मानसरथो यं यधुयू
सवाभेवडा नकुतुसर्वद
वोनीदं नञाय नमाहुम
॥ रुगवंद वद वंडा यसा
दयनि निर्मितं गथाद्ध
पूसमा नोथ सखु वक
वसथ ऊं यवमानंदव
थल दुद्रायू ननय नसा
। रो कयामि यथ सानर
यता यवमथ वडा

या वनुनयन सूर्यो भूते
भूवनवर्त्तिनी ॥ नावद्वय
सुरुआलि लिवलाक मली
यन ॥ नाखला नऊयी ना
जा सुविनं सूर्यजा सुधा ॥
सधनं कया वमभो वसु
रि दाना क्लमे ववा ॥ रुम
नक्षयदानं न पूषकादि
गुलं धऊं यावचे द्यदि
वाक वयरुतया थामो
गरलनिथसा या वनो
रुहिमा वल यरुतयनि
धं निएथी नल ॥ केलास
गिनि जायनि स नमनया
वनदी सागना सखु ३३
कलसध ऊं निद्रयमं ता
वाच्चै वनिष्ठ गुणा यावचे
दुस्य सूर्यस्य भेदिनी स
य सागना थया वदा स
गा वना वल्लयलि नोख
३३ यजादान कलशदान

धननिस्त्यासविषयनिस्त्या

ॐ नमो भगवते ॥ ॥ अथ विषयनि
 स्त्यासनात् ॥ ॥ ६६ ॥ ॥
 मन्त्राय नमः ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १३
 ॥ १२ ॥ ॥ वायक ॥ ॥ यथा राज
 न ॥ सूर्यार्घ्य ॥ न्यास ॥ रुमिचतुस्र
 स्काव ॥ निर्मळतादि ॥ वलिरुवत
 मत ॥ अमुमनुल ॥ आम्नादिमध्वार्क
 ॥ वाच्याय ॥ भववान हृदयमनुल
 धन ॥ रुवगस वलि विषय ॥ अमुम
 उगत ॥ रुवग वलि ॥ ॐ चतुर्गुणयावा
 न ॥ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते साय ॥ वरुका
 ॐ अमुमनुल ॥ गल वलि ॥ ॥
 ॐ गलनात्वा ॥ यागिलि वलि ॥ ॥
 ॐ जातवदस्य ॥ मारुगल वलि ॥
 ॐ विष्णुगुण ॥ अमिताभ ॥
 रुकुकादि ॥ लाकपाल ॥ चवसधि
 यागिलि ॥ अजनादि ॥ ॐ अमरकाता ॥
 ॐ चतुर्गुणयावान ॥ ॐ नमो भगवते
 साय ॥ धन वलि विषय ॥ वादकास्य
 कासासवाचकलकाय ॥ कलसयू
 जा ॥ ॥ सूर्यार्घ्य ॥ न्यास ॥ आत्मय
 जा ॥ ॐ गलनामीतिमनुलमनाह
 तिप्रतिष्ठाकयूजयत ॥ विधिध
 वदावर्त ॥ ॥ ॥ रुयंस्वान ॥ अह
 त ॥ इर्वा ॥ रगमय ॥ ॥ यका ॥ यका ॥
 यका ॥ ॐ वक्राहरी ॥ ॐ वक्राहरी ॥

वलि गल ॥ रगमय ॥ ॥ यका ॥ यका ॥
 यका ॥ ॥ ॥ वासावाचक वलि
 विषय ॥ गतिकयूष्टिक ॥ वक्राहरी
 जागतिकयूष्टिक ॥ ॥
 रुमिति विष्णुदि चतुर्गुण ॥ ॥
 वाच्याय आम्नादिमध्वार्क ॥ धन वक्र
 थमत ॥ वलि ॥ अद्यालमूल ॥ ॥
 मलयजा ॥ आवाहनादि ॥ धन मूला ॥
 अमुमनुल धिधन ॥ यकायाहताया
 गुति रुयस्वानादिधन ॥ हृदयमनु
 ल ॥ भववानयय ॥ मनु ॥
 ॐ वक्राहरी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 धिधकायय ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 क ॥ मूसिक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 लधि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नत ॥ निर्मळत ॥ यका मृतमान ॥
 अर्घ्याशदकन अरुदही ॥ चतुस्र
 काल ॥ विगलनमूलमनुल साधन ॥
 यूनत ॥ ॐ गलनामीतिमनुल ॥ विधि
 काय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 रु ॥ ॐ गलनामीति ॥ ॥ ॥ ॥
 दिवादगयूजा ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ गलनाय नमः ॥
 ॐ नमः ॥ गलवाय नमः ॥
 ॐ ॐ सुरुवाय नमः ॥
 ॐ धीमान ॥ ॐ मरुधवाय नमः ॥

ॐ महात्मना मुवतस्य ॥
 ॐ महादवाय नमः ॥
 ॐ मानसाक ॥ ॐ स्नानव २
 ॐ मानासहाक ॥
 ॐ शिवाय २ ॥ ॐ नमस्तु सयस्य ॥
 ॐ यद्युयतय २ ॥
 ॐ सिवातामासि ॥ ॐ उग्रय २
 ॐ नमः ॥ ॐ मवचयसगय ॥
 ॐ सर्वाय २ ॥ ॐ उग्रवाहित ॥
 ॐ शिवकाय २ ॥ ॐ अग्निः ४ द
 ॐ उग्रवाय २ ॥ ॐ शिवकं यजा ॥
 ॐ वरुक्षजाय २ ॥ ॐ नमस्तु वृद्ध ॥
 ॐ ॥ ॥ इधकाय च उग्रगयजा ॥
 ॐ अक्षवाजाय कितव ॥ ८ ॥ सद्योजाता
 दि ॥ ४ ॥ जवचव ॥
 ॐ वक्रव २ ॥ ॐ वक्रयहान ॥
 खवचवक ॥ ॐ उग्रविह्व २ ॥ ॐ विः
 क्षावनातमसि ॥ ॥ अचमा ॥
 ॐ उग्रगदासिवाय २ ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ मृवाय च ॥ मूसि ॥
 ॐ उग्रालाकि न्येतम ॥
 ॐ उग्रतद्यतयावान ॥ ४ ॥ कयालीसादि
 ॥ अगितामादि ॥ रुकुकादि ॥
 ॐ अक्षवृत्तनक्षाय २ ॥ ॐ नक्षत्रय ४
 स्वाहा ॥ लूति ॥ ॐ उग्रनागय २ ॥
 ॐ नमस्तु सयस्या ॥ निवृजस्त ॥

ॐ सर्वथादवथा नमः ॥
 ॐ अस्मिन्वाता ॥ ४ ॥ यदीय न वद्यता
 म्वलरुलादिगस्य धूतक ॥ काययात
 ग्यावक्ष्यक सकली आश्रयस्य उ
 रुवर्गा ॥ लूडाहाकाठतदावम ॥
 ॐ उग्रगजासाय २ ॥ मूलनसकायधून
 यमानदावासि विवा
 ॐ उग्रव ॥ ४ ॥ रुकुमलाययामि ॥
 मखासायनम ॥
 ॐ उग्राल अग्निर्ललाययामि ॥
 यमासायनम ॥
 ॐ उग्रवृक्षमलाययामि ॥
 महिखासायनम ॥
 ॐ उग्रमयमरुमलाययामि नमः ॥
 ॐ उग्रगजाय २ ॥
 ॐ उग्रन नमस्तु मलाययामि ॥
 गवृक्षसायनम ॥
 ॐ उग्रअक्षमलाययामि ॥
 मकलासायनम
 ॐ उग्रवृक्षमलाययामि ॥
 मृगसायनम ॥
 ॐ उग्रवायुमलाययामि ॥
 रुयासायनम ॥
 ॐ उग्रकवृक्षमलाययामि ॥
 वृषासायनम ॥
 ॐ उग्रवृक्षमलाययामि ॥

हस्त्राय नमः ॥

उं वक्र सं रु ला य या मि ॥ १० ॥

धन धि धू का य ॥

इ धू का य पू ४ ॥ अग्नि ने स ह्य वा य

०० ॥ य अ व क ॥ धन क्र म ण पू जा

व लि द इ स ग ॥

उं कां ०० ला य व लिं ग क २ स्वा हा ॥

उं गा ना न मि नु ४ ॥

उं न म स्त नू डा व लि द इ स

उं कां रु रु क क ण या ला य व लिं ग क स्वा हा ॥

उं न म ४ १ म्हा य य ॥

धू य दी य ॥ अग्नि गं धा दि ॥ च वं अग्नि

उं कां अग्नि य न म ॥

उं कां ०० ण वा य न म ४ ॥

उं अग्निं दू रं ॥ उं ०० मा नू डा य ॥ व लि ॥

उं कां धि यू ना क क ण या ला य २

उं या र्यं व कं य जा ॥ आग्ने य स्य य णि म ॥

उं कां गु व व २ ॥

उं यां व का य २ ॥

उं रु रु स्य ग अग्नि ॥

उं यां व कं य जा म ह ॥ व लि ॥

अग्नि ता म्हा र व वा य २

उं अग्नि स्या ता ॥ ॥ ने स ह्य स्य य ॥

उं कां य मा य २ ॥

उं कां नी वा य २ ॥

उं य म न द हं ॥

उं नी ल यी वा ॥

उं कां अग्नि व ता ल क ण या ना य २

उं अग्ने ता न ह्ये वि नू या ॥

उं कां ने स ह्य य २ ॥

उं कां उ य य २ ॥

उं य न द वी ॥

उं उ र्यं व वा अ या व ॥ व लि

उं अग्नि जि ह्वा क ण या ला य २

उं य म द ह्य म नू त ४ ॥

ने स ह्य स्य उ रु व ॥

उं कां अग्नि ता य २ ॥

उं कां य स्य य २ ॥

उं नी ति य दा ॥

उं न म ४ १ म्हा वा य य ॥ व लि ॥

उं नू रु व वा य २ ॥

उं अग्नि म्हा र्य उ र्वा ॥ ३ ॥

वा य य स्य द क्षि ण ॥

उं कां व नू ण य २ ॥

उं कां सि वा य २ ॥

उं ०० म म्हा व नू ण य २ ॥

उं सि वा ना मा सि ॥ व लि ॥

उं कां का ला क ण या ला य २ ॥

उं या न नू ड सि वा ॥ १ ॥ वा य य ॥

उं कां वा य व २ ॥

उं कां स्वा न व २ ॥

उं न व वा य २ ॥

ॐ नमो सुसर्था ॥ वलि ॥
 कान्तवृक्षकणालाय २ ॥
 ॐ चरुं च तयावान ॥ ८ ॥
 वायुश्च सूर्य ॥
 ॐ कां गलयतय २ ॥ ॐ कां मरु
 नाय २ ॥ ॐ आरुत नूतु ॥
 ॐ मानसाक ॥ वलि ॥
 ॐ कां चरुं च वाय ३ ॥ ॐ नीचय
 वा ॥ ॐ गीतनस्ययमिम ॥
 ॐ कां कववाय २ ॥ ॐ कां महादवा
 य २ ॥ ॐ कविदंगजवक्त ॥
 ॐ महामतसाउवनस्य ॥ २ ॥ वलि
 ॐ कयादकणालाय २ ॥
 ॐ नमो वलुसयथा ॥ ॥ ॐ गीतना
 ॐ कां ॐ गीतनाय २ ॥ ॐ कां दवाय २ ॥
 ॐ अरिवासुनरानुमा ॥ ॐ दवअ
 वा ॥ वलि ॥ ॐ कां रीमनूयकणया
 नाय २ ॥ ॐ अश्वाचनधि ॥ ० ॥
 ॐ गीतनस्यदक्षिणा ॥ ॐ कां वक्राक्ष २
 ॐ कां रीकनाय २ ॥ ॐ वक्राक्षयत ॥
 ॐ नमो रीरुवायय ॥ ॐ कां काध
 रीनवाय २ ॥ ॐ यकृद्व ॥
 धनयिथुकाय ॥
 इथुकाययूजा ॥ अग्नि ॥

ॐ कां दनयुगय २ ॥ ॐ कां सयाजा
 नाय २ ॥ ॐ अकनाजाय ॥ ॐ सयाजा
 नायमीमित ॥ वलि ॥
 ॐ कां उतमरुं च वाय २ ॥
 ॐ यरुतानामधि ॥ नैसय ॥
 ॐ यतायुगय २ ॥ ॐ वामदवाय २ ॥
 ॐ अकनाजाय ॥ ॐ वामयसविभु ॥
 वलि ॥ ॐ कां कयालिमरुं च वाय २ ॥
 ॐ ययथा ॥ ॥ वायय ॥
 ॐ कां दवाययुगय २ ॥ ॐ अथावाय २ ॥
 ॐ अकनाजाय ॥ ॐ यागनूडसिवा ॥
 वलि ॥ ॐ कां रीघनरुं च वाय २ ॥
 ॐ यनवृवि वि ॥ ॐ गीतन ॥ ॐ कां क
 विशगय २ ॥ ॐ कां गत्यनूवाय २ ॥
 ॐ अकनाजा ॥ ॐ यत्यनूवदधू ॥
 वलि ॥ ॐ कां रीरुवरुं च वाय २ ॥
 ॐ यतगावक्त ॥ धूयदीय ॥ अ
 र्गक्षदि ॥ धनकायसाठाया
 जाविधि ॥ ॥ थयमाजवचन
 रवडावनूयवृजत ॥ धनम
 यगयविधि ॥ ॥ ॥

गतादिवसनूकमन ॥ अग्नि कृत्वा
 सुविधन ॥ विधिवत्कलनचन ॥

सूक्तानि तत्र भवन्त्येव दधन्नां च वेदेषु ॥

यागस्वस्तिरिति १ सदानं ॥ ॐ अमीव
हवाक्काष्ठगविष्णवूयायविष्णु न सं
खासु सवयाधित १ गुरुं गुरुं ॥
ॐ वाक्काष्ठगक्रवायि न्या अङ्गं यं सो
म्यानि द्रव्य १ यविरुहा सधिताना मि
त्रमूतिना अङ्गं स्वायिति ॥ भूयादिमु
ति ॥ वासुपुत्रस्व न मरुमु रू सध्या
रिवत १ यं सो मरुदधन धन्यादि
समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

धनरूपयुजा ॥
वाक्काष्ठगविष्णवूयायविष्णु न सं
खासु सवयाधित १ गुरुं गुरुं ॥
ॐ वाक्काष्ठगक्रवायि न्या अङ्गं यं सो
म्यानि द्रव्य १ यविरुहा सधिताना मि
त्रमूतिना अङ्गं स्वायिति ॥ भूयादिमु
ति ॥ वासुपुत्रस्व न मरुमु रू सध्या
रिवत १ यं सो मरुदधन धन्यादि
समृद्धं कुरु सर्वदा ॥
धनरूपयुजा ॥
वाक्काष्ठगविष्णवूयायविष्णु न सं
खासु सवयाधित १ गुरुं गुरुं ॥
ॐ वाक्काष्ठगक्रवायि न्या अङ्गं यं सो
म्यानि द्रव्य १ यविरुहा सधिताना मि
त्रमूतिना अङ्गं स्वायिति ॥ भूयादिमु
ति ॥ वासुपुत्रस्व न मरुमु रू सध्या
रिवत १ यं सो मरुदधन धन्यादि
समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

वै यश्चिम कीलसकल्य हि दाव
वायश्चनधूनक ॥ ध्यातामपूर्व
साकनवताति ॥ यू १ अग्नि कोटा की
लयति हि दाव वी गतता ॥ धन
यश्चिम कीलसहि दाव दक्षिणाय
न धक्रम ल दक्षिण उरुवस कल्य
कीलसहि दाव वायश्चनधूनक ॥
ध्याताम उरुवसाकनवताति ॥
धयू २ ॥ ॥ वी गतनयश्चिम दि
ग यीयुगुठि कीलहि दाव नेमयन
पूर्वदिग यीयुगुठि कीलहि दाव वी
गतन यश्चिम दिग यीयु कीलस
धूनक ॥ धनाम उरुवसाकनवताति ॥
॥ ३ ॥ ॥ वायश्चन पूर्वदिग यीयुगु
ठि कीलहि दाव अग्निन उरुव दि
ग यीयुगुठि कीलहि दाव अग्निन
यश्चिम दिग यीयुगुठि कीलहि दा
वा वायश्चन दक्षिण दिग यीयुगु
ठि कीलहि दाव वायश्चन पूर्व दि
ग यीयुगुठि कीलसधूनक ॥ ध्याता
म उरुवसाकनवताति ॥ धयू १ ॥ ४ ॥
अग्नि कीलसहि दाव वायश्च कील
नधूनक ॥ ध्याताम मीतयुक् ॥
धयू १ ॥ ५ ॥ ॥ वी गतन कीलहि दा

॥ महा ॐ ह्रायवा ॥ ॥ जयाय २ ॥
 प्रमयीतयिष्टप्रविगुयगाकावर्लिनम
 ॥ ॐ समर्पति ॥ ॥ ॐ ह्राय २ ॥ ॥
 वनलवर्लिनम ॥ ॐ सयावा ॐ ह्रा ॥ ॥
 आदिह्याय २ ॥ ॥ ॐ धूमविगानवर्लि
 २ ॥ ॐ आन ॐ श्रीसयाय ॥ ॐ गधूम
 कवर्लिनम ॥ ॐ क ॥ सयासदाना
 ॥ ॥ ॥ रुणाय ॥ ॐ सयावादकवर्लिन
 म ॥ ॐ आ ॐ १ ॥ गिगना ॥
 आमाय ॥ ॐ यकिमीसवर्लिनम ॥
 ॐ यकन ॥ ॐ तियूर्वदिया ॥
 आनय ॥ ॐ यिष्टप्रविगुयवावर्लिन
 म ॥ ॐ अग्निदूत ॥
 प्रमाय ॥ ॐ यलाजासुवर्लिनम ॥
 ॐ गमीगन ॥
 विगथाय ॥ ॐ यमधुसुवर्लिनम ॥
 ॐ यरुयविगुमर्चि ॥
 अंगनाय ॥ ॐ यमधु ॥ वलिनम ॥ २
 ॐ अग्निमूर्त्ति ॥
 यमाय ॥ ॐ यवनकानावर्लिनम ॥ १
 ॐ यमनदह ॥
 गन्धर्वाय ॥ ॐ यमसुगंधवर्लिनम ॥
 ॐ वलुयमवसति ॥
 रुणाय ॥ ॐ यमगङ्गावर्लिनम ॥

ॐ यरुणानामधि ॥
 रुणाय ॥ ॐ यनीलजवर्लिनम ॥
 ॐ ॐ मंग ॥ ॥ ॐ दक्षिणया ॥ ॥
 निसयाय ॥ ॐ यतिलादतवर्लिनम ॥
 ॐ यकदवी ॥
 नदिनतै ॥ ॐ यडाइमलदककाष्टवर्लि
 नम ॥ ॐ नारिर्मर्चि ॥
 सुग्रीवा ॥ ॐ यययावर्लिनम ॥
 ॐ यानद ॥
 ययदकाय ॥ ॐ यकवर्लिनम ॥
 ॐ यमागलायागला ॥
 वरुणाय ॥ ॐ यवकयमवर्लिनम ॥
 ॐ ॐ मंगवर्लिन ॥
 युकाय ॥ ॐ यमवावर्लिनम ॥
 ॐ अनात्यत्रियुमा ॥
 कतव ॥ ॐ ययतायुगवर्लिनम ॥
 ॐ ककु कनक ॥
 गनेयनाय ॥ ॐ ययगमधुवर्लिनम ॥
 ॐ गीनादवी ॥ ॐ यययिमस ॥
 वायव ॥ ॐ यमागकवर्लिनम ॥
 ॐ गववायु ॥
 नागय ॥ ॐ यनागकगलवर्लिनम ॥
 ॐ या ॐ यडायाड ॥
 रुणाय ॥ ॐ यमसुयवर्लिनम ॥

ॐ कामकृदमिन्द्रा ॥
 यकायवममगन वलिनमः ॥
 ॐ कविर्दगा ॥
 सामायवमयायसमश्चकवलिन
 मः ॐ कुर्कलाकुर्क ॥
 विकिलिकावमगलकवलिनमः ॥
 ॐ उषधायस ॥
 दिव्येवमलायिवलिनमः ॥
 ॐ नदामर्गयुर्ममः ॥
 अदिव्येवमयुविकावलिनमः ॥
 ॐ अदितिद्योवदितिवकवि ॥
 धनदहवदिगया ॥
 आयायवमइमवलिनमः ॥
 ॐ अमृत्कवमः ॥
 आयवसायवमदधिवलिनमः ॥
 ॐ श्रीमाली ॥ धनं गूणनाथ ॥
 मन्त्रियवमलकवलिनमः ॥
 ॐ सफसम ॥ धनयुर्वध ॥
 सावित्रवमकलादकवलिनमः ॥
 ॐ आनन्दी ॥
 सावित्रीवमयुगपूयावलिनमः ॥
 ॐ श्रीधर ॥ धनं अमृता ॥
 विवश्ववमवकवन्दनवलिनमः
 ॐ देवावधर्य ॥ दक्षिणध ॥

ॐ न्यायविद्वानवलिनमः ॥
 ॐ वृद्धविष्णुविचक्रम ॥
 ॐ उजयायवमद्यगादनवलिनमः ॥
 ॐ अमृतावद ॥ नमः ॥
 मिशायवमयुगयायसवलिनमः ॥
 ॐ विरुदवा ॥ यन्त्रिमाध ॥
 नृदायवमयदिमीसवलिनमः ॥
 ॐ नमस्तु ॥
 नृदासायवमार्द्रकवलिनमः ॥
 ॐ मानस्तु ॥ धनवायु ॥
 महीधनायवममायानमस्तुमीसव
 लिनमः ॐ नमिगय ॥ उरुवाध ॥
 वक्रावतमः ॥ धन ॥ अकमालीय
 वंदकवाभदलुकमलुलदधान
 मस्तनयनं यजन्मश्चमृजामन ॥
 वमनिलगुलवलिनमः ॥
 ॐ वक्रयहानं ॥ धनमश्च ॥
 तगावामुवाधयुजयत ॥
 ॐ सिंहासि ॥
 वनकेवमद्यगमीसवलिनमः ॥
 ॐ यमदहामन ॥
 विदाद्येवमदधियमवलिनमः ॥
 ॐ यागायसाह ॥
 पूगनायवमयवयीहं नृधिवलि

ॐ नमः ४ सं ग म व ॥

पायनाक्रमेण पल्लवीं नूतनं
स्त्रिवलिनमः ॥ ॐ शुभं वाचयितुं
को ॥ धर्मं ध्यानादि ॥

स्त्रं दाय एव कृष्णलान्नविलवलि
नमः ॥ ॐ नमः ४ सं ग म व ॥

शुभं मयूपाका कृष्णलान्नवलि नमः
ॐ यागवूद ॥

शुभं कायवकृष्णं सवलि नमः ॥

ॐ सयाजात ॥ ॥ विविधिकायवका

दतयुधवलि नमः ॥ ॐ वाममय ॥

धर्मपूजादि ॥ आवाहनादि धूयादि

मुनि ॥ दक्षिण ॥ धर्मपूजननाव

लिनीधूनक ॥ ॥

आरुति धर्मस्थितिक ॥ ॥

नमयायकं गयाववाला पूजाया

य ॥ सुवलाश्वरुडा कृष्णलायव

लं वति १० कृष्णसमूल ॥ घावकय

क ॥ ध्वारिष्ठमहिष्ठमायावमा

लसासक्ति याय ॥ ध्वारवलि सग

यावका ॥ सनायककाय ॥ ॥

घावसकष्टितगल ॥ यतिक ॥

विभिधं धूनक ॥ ऊह धूनक ॥ ॥

कलसारिखकमूलकलसत ॥ व

नदनादि आर्णाद्यादि ॥ ॥ वासुधा

दवलिविसर्जनयादावधूसवय

कवकाय ॥ ॥ कलसकृष्णगत

ध्वरुसवस्यताथ ॥ ॥ यदक्षिण

यादाडाकवत ॥ ॥ ध्वरुसववि

गतन्यावकमगत ॥ ॥

तताश्रुमिकुण्डयादविधानं व ॥ आवा

र्यनकलगावर्तन ॥ गणपतिपूजाया

सगुणवहिष्ठावीगादि ॥ वसुलि ॥ ॐ

युग्मयवकं ॥ सर्वपूजा ॥ वददीयाद

ॐ ॥ कर्ममण्डलयाद ॐ ॥ कर्मावाय

नपूजा ॥ दक्षिणकलसयाद ॐ ॥

जा ॥ यवाममादि ॥ स्तान ॥ विचवीगल

क्लिकलिखत ॥ ॐ ध्वरुजनी ॥ ॐ

जादि ॥ नडा ॥ रुडा ॥ जया ॥ विका ॥

ध्व ॥ ॐ जां हृदयादि वरुणनपूजा ॥

ॐ नारिर्भयिर्ह ॥ ॐ रुडाता अग्निवा

त ॥ ॐ यनासमस्तसा ॥ ॐ

ॐ विवारुवयजाथा ॥ ॐ

यालपूजा ॥ वदनादि धूय ॥ दीयादि

यतिक ॥ ॐ मनाकृति ॥ जाय ॥

कलसादि ॥ ॐ दवाभग्न मानायुग ॥

मूलार्थकमाचार्ययादरुमिगथा ॥

निमिक्तनादिरुमि ॥ ॐ हं वा का व य न ॥
 चन्दनादियुष्मं सगुणदिदाययन ॥
 विश्वकर्मायुजाचन्दनादि ॥
 माय ॥ विश्वकर्मान्नमायुर्हं ॥ जेलाक
 रुष्टिकावक ॥ यथायुधकनायं च
 विश्वकर्मान्नमायुर्हं ॥ ॥ विश्वकर्मा
 रुष्टवर्गलि ॐ हं मर्त्यिददक्षिणसह
 दाययन ॥ ॥ वावा न्य ॥ यादस्कायन
 मूलाचार्यनअग्निक्वउ. चतुर्वदीद
 दिगकनस्कायादस्कायादस्कायनकाय
 यन ॥ कमाचार्यगकिरुदन. कर्मम
 उलेयादस्कायनकाययन. पूर्ववग
 पूजन ॥ तगावाकनादियुजन ॥ दक्षि
 णमर्मा ॥ यादस्मिअरिधक ॥ ऊऊ
 मातारिधक. चन्दनादिसगुणगीर्वा
 द ॥ ॐ निअग्निक्वउयादविधि ॥

तगाअकलार्थ ॥ अग्निवासनकस
 कृदवमगुयया ॐ नानस. गिवग
 क्रियाखवसवलियाउहवस. पूर्व
 यथिमइकउदक्षिणउहवयाकृ २
 थसगयागयाय ३ थविधि ४ ॥ थ
 लजनधन ॥ यकाथसाथय ॥
 गाय ॥ उय ॥ कादू ॥ हाक ॥

सवावयाग ४ ॥ अङ्गुलि १२ ॥ इथा ॥
 याग ४ ॥ अं १३ ॥ इथा ॥ याग ४ ॥ इथा ॥
 अं ८ इथा ॥ याग ४ ॥ थक्रमत. कात
 हिनउ ३ ॥ वलजनह. सवावयतिथं
 खतधन ॥ श्रीहि ॥ स्वानवा ॥ ग्यामा
 ॥ लरुति ॥ मूझ ॥ हामल ॥ सिमियू ॥
 उयका ॥ कावाग ॥ स्यक ॥ मास ॥ थ
 डिगा. साइइतकन ॥ वंथमरुन ॥
 वाजनदायक ॥ मूलमरुनहाव ॥ म
 मलय १० ॥ ॥ हवठिलेखविय ॥ व
 लिविय ॥ ॐ सर्वरुगस्या २ ॥ उवचन
 नादि ॥ हामल. गवा. साउ. सालिक
 जा. रुखत्रिचून. थगतायकाय
 थयुजा ॥ ॐ सर्वरुगस्याउषवलिंनम
 ४ ॥ वामरुहनधियादददरुहन.
 यंखस्यतये ॥ मरु ॥ ॐ सर्वरुगस्याउ
 षवलिंनम ४ ॥ थथमअस ॥ पूर्वसा
 कीवजा. धल. साधव. ॐ न्यादिलाक
 यालयाग. थवधवदिगसवलिविय
 ॥ संक्षमस. अङ्गुवातिसंथथ ॥ पूजा
 पूर्वग ॥ १ ॥ द्वितीयदिवस ॥ यिरु
 याग ॥ हामल. पूवाक ॥ ॐ न्यादिउ
 रथ ॥ ॥ हतीयदिवस ॥ उदया
 गंधलि. साउ. गवा ॥ ॐ न्यादिउरथ ॥

॥ चतुर्थदिवसः नागयागः ॥ कू
चनमाभिनलिकालयालख ॥ ॐ न्या
दिउर्थः ॥ ॥ यश्चमदिवसः ॥ वक्रा
यागः यत्र ह्यान अकृत ॥ ॐ न्यादिउ
र्थः ॥ ॥ षष्ठदिवसः शिवयागः ॥ व
क्रमाठजा ॥ ॐ न्यादिउर्थः ॥ ॥
सप्तमदिवः विष्णुयागः ॥ धनजाया
॥ ॐ न्यादिउर्थः ॥ ॥ शुक्रयागः ॥
वेङ्कवः ॥ जाइइ वेङ्कदवयागः ॥ मास
पित्रलिउ ॥ ॥

तथादिवसानुक्रमणः ॥ यजमानयाक
सः वृद्धिप्रार्थनायाय विधिः ॥ यथाक
मसदक्षिणशुक्रमायास्य ॥ सिजल
रुंदासद्यत्रकात्रक ॥ यजत ॥ ॐ नः
जासि ॥ ॐ कां वसुधेम ॥ वृद्धिप्रार्थनाया
दाक्रयाउरुव अठस ॥ यजमानस्य
धनकायाव यजमानासुगमवा ॥ ११
मयावक्रसधायनक्रसधवीयूज
त ॥ ॐ वः ॥ १४ यविणमसि ॥ मजल
यर्थः ॥ अठसवाठधनधालस
चन्दनादियूजत ॥ ॐ वसुधेम ॥
ॐ नमः ॥ अठससकल्य ॥ दक्षि
णदात ॥ विधिः ॥ धनक ॥ धनवस

न्मावाविधिः ॥

अथयुर्वस्मिन्दिवसः आसन्नविधा
न ॥ ॥ दूत्रकर्ममालकास ॥ किलकाः
लिवकवमियनिर्ममाल ॥ ॥ वक्रक
याचक ॥ यवाचक गगवृद्धसूपादि
कावयन ॥ यथाविधानेन ॥ ॥
अथनिर्मैच्छुनाग्निकावयन ॥ सैन्ध्या
या निगीत्यवगमिहामसमाचरः
॥ ॥ नूगनराजुं अग्निकुण्डल ॥ काग
नेलनेवलियुं आधावाकृत्वा ॥ कल
दादिमकुदयलव ॥ दणयालवलि
॥ चन्दनादिरुवर्ण ॥ ॐ अथादियुधः
राजनं युवूनमस्कारं न्यास ॥ अथवा
ययूजा ॥ स्वात्मयूजा ॥ कुण्डलधनं ॥ अ
मुनेनिवीकल ॥ उरुवामुखलमगुय
नमृचदक्षिणवादिगि ॥ ॐ नत्वायामि
॥ अमुनात्युद्धनं ॥ ॐ यद्ववादवरु ॥
अमुलयविसमूरुनं ॥ ॐ मानस्माक
गनय ॥ त्रयलयनं ॥ ॐ गिवानाथ
यविष्णुरुस्वकुन्दायधीमहि रत्नावू
दयवादयान ॥ ॐ य ॥ ॐ हिनयग
रु ॥ वीगचूर्णनयर्गलिखन ॥ ॐ सद
सत्यमिमरु न ॥ धनयुद्धयेर्ण ॥ ॐ

धनुर्निरूपणं सुवर्गकलसध्वजा
वेदे कनकजले

आचार्यद्वययजमानरुविष्णोर्नराज
यस ॥ गभययाजय ॥ मधुयनाशेआ
चार्याभ्यां प्रतिष्ठतां ॥ ॥ यं च वाणि
नार्यवा अहानार्यतत्वेवच सर्वका
मसमर्द्धार्थं कावयदधिवासने ॥ ॐ
तिश्रुधिवासनरुलविधि ॥ ॥
वडाइम्वनमध्वरुं यिलक्षं तावदीक
मात ॥ विदिगकदनीदानीयताकाद
गदिक्षमं ॥ ॐ त्राय ॥ अयमायूर्ध्वन
कमाअय ॥ गभय ॥ यकजं वृरुलारु
गिदक्षि ॥ धवेवकडुकी ॥ नैर्मसीधुम
रायाकं वानू ॥ अयाधुनं तथा ॥ वाय
यांरुनिर्गवर्धुं सोमयीतमथायन ॥
ॐ गभ्याधुनकुरुवर्कं वक्षस्मानंयकी
हितां ॥ हनिगम ॥ धाविष्टीव ॥ यश्चव
धुगद्वजक ॥ यं च सुगकासनरुयवि
हव ॥ यगहन ॥ वलंगत ॥ इवल ॥ यिल
राय ॥ ॐ त्रियश्चवलवघाय ॥ ॥
यश्चसुगकासघाय ॥ अद्रग ॥ दारुल
सगा ॥ अका ॥ लका ॥ खक ॥ खान ॥ काय ॥
सयाउवयाचनं ॥ घउ ॥ ॥ कसाक
वरुदिगयातमानका ॥ यूरु ॥ कं ॥ खतं
कुरु ॥ यीउति ॥ ४ ॥ चतुर्वदीयातं ॥ ॥
तताकलसवाय ॥ क ॥ ख ॥ उ ॥ य ॥ माल

का ॥ कल ॥ डंग ॥ वरु ॥ श्रीलक्ष्मी ॥
यकतिष्ठ ॥ वका ॥ लका ॥ सगा ॥ आक
ता ॥ अलाग ॥ मि ॥ कल ॥ गया ॥ गन ॥ स
तय ॥ धूर्वाया ॥ कल ॥ सं ॥ स्का ॥ य ॥ यं च य
लव ॥ सं ॥ यू ॥ ता ॥ रु ॥ ला ॥ क ॥ ग ॥ त ॥ थ ॥ अ ॥ क ॥ र्ण ॥ न
नर्ग ॥ र्ण ॥ वडा ॥ मा ॥ धी ॥ बी ॥ हि ॥ रु ॥ ल ॥ स ॥ इ ॥ य
वयू ॥ वय ॥ लं ॥ व ॥ ग ॥ य ॥ हि ॥ ॥ च ॥ न ॥ द ॥ ना ॥ दि ॥ स
मं ॥ रु ॥ वा ॥ ॐ ॥ गि ॥ क ॥ ल ॥ स ॥ वा ॥ य ॥ वि ॥ धि ॥ ॥

उं नमः शिवाय ॥ ततं यागमानादिनि
त्यकर्मकावयग ॥ यरु मधुयनेमह
दिशिवाक ॥ यजेमाननसूर्यार्ध ॥
उं अयादि ॥ श्री ३ ॥ अथनामध्वनस
दागवस्य ॥ स्वर्धुकलसध्वजाववाह
ननिमित्तार्थं सूर्यार्धं नमस्वाहा ॥ य
यी ॥ उं माहा ॥ धका ॥ न ॥ या ॥ दि ॥ ॥ अ ॥ वि ॥ जा
दि ॥ या ॥ दा ॥ र्ध ॥ ॥ य ॥ य ॥ २ ॥ ॥ य ॥ य ॥ रु ॥ उ ॥ न ॥ ॥
उं सिद्धि ॥ न ॥ मु ॥ या ॥ दि ॥ ॥ य ॥ ज ॥ मा ॥ त ॥ त ॥ ॥ अ
चार्य ॥ त ॥ गु ॥ नू ॥ त ॥ म ॥ स्का ॥ र्ण ॥ ॥ न्या ॥ र्ण ॥ क ॥ वा
॥ उं ॥ को ॥ को ॥ र्ण ॥ अ ॥ रु ॥ य ॥ र्ण ॥ रु ॥ ॥ क ॥ न ॥ सा
धनं ॥ ॥ उं ॥ को ॥ रु ॥ द ॥ या ॥ य ॥ न ॥ म ॥ ॥ ॥ ॐ ॥ या ॥ दि
वर्धं ॥ ग ॥ न ॥ क ॥ नी ॥ न्या ॥ सा ॥ ॥ अ ॥ र्ध ॥ या ॥ गु ॥ य ॥ जा
द ॥ य ॥ ना ॥ दि ॥ क्ष ॥ नू ॥ मू ॥ डा ॥ र्ध ॥ र्ण ॥ तं ॥ ॥ आ ॥ त्म ॥ सि
वता ॥ दि ॥ य ॥ जा ॥ ॥ ॥ ग ॥ रा ॥ नं ॥ द ॥ य ॥ य ॥ जा

लि-

गुरुतामाद्वनन ॥ गरी वरुका रंग
 रुडुकादि ॥ अगितीगादि ॥ वक्राव्य
 दिनवाता ॥ रुगस्वस्वमंथलवलि ॥
 उंगलानीखा ॥ उं नमावसुभाय ॥
 उं अम्वअम्विक ॥ उं रुयतयखा ॥ उं
 उं गंयगयावान ॥ उं विष्टतयका ॥
 उं याथीदिगखाहा ॥ धूयदी ॥ जाया
 काणं ॥ उं तिर्वादीत्यादि ॥ अम्वनवलि
 विसर्जनं ॥ कृयातकयवलि ॥ कृया
 तमउयदायकीवाय ॥ अगिवलिवि
 धि ॥ ॥

आचार्यनवीरिनजसर्वयंष्टखा ॥ म
 लमंयतन्यासंष्टखा ॥ दानमंयतथा
 क ॥ उं कौले आकाशायातमभादिभा
 सृष्टीदिखा ॥ उं कौंगलयतयतमभा
 दानवामडुईइवित्रिक ॥ उं जीसव
 स्वयेतमभादकं ॥ उं दानधियतमभा
 मध्या ॥ उं कौंतदिनतमभास्वदकसा
 खायी ॥ उं कौंगीगयतमभा ॥ तत्तमभा ॥
 उं कौंमहाकालायतमभा ॥ वाम ॥ उं
 कौंयमूनायेतमभा ॥ उं कौंदरुलीतमभा
 उं कौंदरुअम्वयदुदरुली ॥ उं
 कौकववायदु ॥ अवयुं ० न ॥ अम्व
 वरु ॥ मूलतावलाक ॥ उं ईकारधन ॥

तगानावाचमूडायाभुनवीरिनज
 सर्वययुषीष्टखामध्वति ॥ कृष्य ॥
 दिव्याकविदलोमानविद्याकालयय
 कृतिकायाधिद्यातनात्साय ॥ कव
 वाभुधमयीदिग्वंष्टखा ॥ दहलीम
 सृसं ॥ दहयादतां ॥ यविष्ट ॥ या
 तालसंस्तितायच ॥ उविदिष्टीतवि
 दगाभाविष्टकलाययकुना ॥ तत
 उवासाह्या ॥ उं वीरुष्टम ॥ मलुय
 यविष्ट ॥ दहलीमसुकलगीष्टय
 त ॥ अत ॥ यद्मासनेकवकुच ॥ रुमव
 उं मयोवती ॥ सद्यरुलेष्टगायध ॥ वा
 मतर्जनीविजत ॥ निविष्टीयष्टकार्य
 र्थतर्जनीधायतसदा ॥ अम्वनद
 मासतनमभा ॥ उं वंकाहतेवलगरु
 त ॥ उं अमंदगा ॥ वलि ॥ उय ॥ काय
 तर्जनीरुलसंयूकं ॥ अम्वनयमहा
 रुमभासर्वविष्टदयार्थच ॥ अम्वमू
 तमाभुत ॥ अम्वगत्यादि ॥ अगिदा
 वयाग ॥ ॥ तगामउयमध्याम
 निजादिवरु ॥ अतकीदातयी ॥ म
 लाचार्यकर्मार्थयुजतादियठिल
 मूकगविय ॥ आवरु ॥ मयदादि
 ४ कमाचार्यनी ॥ ॥ अकुक्वव

दधिगितकं (गममयं पृथङ्गं
 न (गममयं) घनक (गमदक (ज्योः
 वसुधैविकुमभोयधमाउमाय
 निगितावद्वि. यासामकेड
 नादनं राहूनं वनूर्णं इत्यं
 मध्यगुपक्रयातु कं ॥ ॥
 अथादि ॥ सूर्यार्धकला ॥ गुन

[illegible]

यति॥ जायन्ता ॥ उमायति ॥
 धनवदतमधसयासमून ॥ गयवा
 ॥ उंसन्वयामिसमायडावधालि ॥ स
 मावधयालसतसं नवतिजगति
 ॥ ययती ॥ संसर्धूमतीमधूमतीति
 ॥ ययती ॥ जितानीकला ॥ एक रागद
 वरु ॥ ॐ नावती ॥ एक रागजुमि ॥ उं
 ॐ देवि ॥ एक रागजजमान ॥ उं मा
 नकाकतनयमान जूयुमाना ॥ ग
 ममाना ॥ अथयनीविष ॥ मानाविना
 नूदरातितावधीलरुविषक ॥ गद
 मित्वा रुवासरु ॥ ॥ गमयतिरुस्तान
 ॥ उं तत्वाजामि ॥ उं दवस्यत्वा ॥ उं यय
 यथिची ॥ उं दधि क्राप्रा ॥ उं तजासि ॥
 उं सधूवाता ॥ उं तम ॥ गमवायच ॥ उं
 वक्रयस्तन ॥ उं विष्णुनोत्तमसि ॥
 तम ॥ स्रुवाय ॥ उं निवानामासि ॥
 आवाहनादि ॥ जायन्ता ॥ उं तम ॥
 निवायदवाय ॥ गमयतीरातं ॥ उं
 गगनकीदायसायकी ॥ विष्वविष्व
 नयव ॥ गगनकीयतमायह ॥ निववि
 स्रुत ॥ उं चिह्नदवातीमूदगद

तीकीचकुमिगयवनूनत्या ॥ ॐ ॥
 वाद्यावापुषिविभूतनिद ॥ ॐ सूर्य
 ज्ञातमाजगतरुधुख ॥ ॐ ॥ नव
 द्रुतिकलसायनिधाय ॥ वाक्मनादि
 स्ययधैरगयका ॥ ॥

स्तनखप्रसाधन ॥ अथाना ॥ दत्ता
 तीतालमानन कलावर्दितादेशास
 यजुत्वा ॥ निवारुणवलीधाधसमूह
 मी ॥ उं मही ॥ ॐ ॥ वामरुक्तनृ
 हीत्वा ॥ नैसर्गका ॥ ॐ ॥ तववलि
 ददत् ॥ पूर्वदिमधार्क ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 पायवलिगृह ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 लेलदीपायवलि ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 दीपायवलि ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 यायवलि ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 यवलि ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 वलि ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 लि ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 नमध ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 दिमाहका ॥ उं ॐ ॥ ॐ ॥
 उं ॐ ॥ ॐ ॥

उं ॐ ॥ ॐ ॥

अमिक॥ उं विवत न्वद॥ उं चरु मया
 वान॥ उं अथ वदधि॥ उं उ तापिवन॥
 उं असेकाता॥ उं नमा वरुणाय॥ उं नमा
 श्रुस र्यय॥ युवादि मृहिकावलीनिध
 यवाक्युर्वादि मधुसूत क्रियुत॥ ॥
 तगाहमिसाधनं॥ त्यास॥ उं द्रोह दया
 यतम॥ पृथीतम॥ यक्ष मलय॥ उं
 हसति हसिनस्य ह्रिदिति नसि विव
 धया विवस्य वनस्य धरी पृथिवीमा
 हि॥ ० गीत॥ ॥ अक्षय नदी काल॥ मू
 लतनिनी कर्ण॥ उं अक्षय रुट॥ यो
 कर्ण॥ उं अक्षय रुट॥ कवचन सि
 वर्ण॥ अक्षय रुट॥ निरवति क्रिया॥
 दया पूनर्ण॥ उं अक्षय रुट॥ कवचन
 उं अक्षय रुट॥ कवचन नयन॥ अक्षय रुट॥
 कवचन र्यव गधेता लूक ल॥
 कृणनया धनयिव विग सुत॥ मध्व॥
 उं अक्षय रुट॥ कवचन नयन॥ अक्षय रुट॥
 कवचन र्यव गधेता लूक ल॥
 कृणनया धनयिव विग सुत॥ मध्व॥
 उं अक्षय रुट॥ कवचन नयन॥ अक्षय रुट॥
 कवचन र्यव गधेता लूक ल॥
 कृणनया धनयिव विग सुत॥ मध्व॥

काय धी लयता यन म॥ उं साता यु
 धिवीता॥ नथ पूजनं॥ उं स क ई ज चि
 वरु धय जू स ता दि ल्हा यन॥ उं स ल
 दा यन म॥ उं यीत वरु चरु वी क मरु
 ला ह्य यु र्क॥ वन दार य रु र्क य स
 ल्य दार व धायन॥ हला ध वरु च न
 नादि॥ उं अक्षय रुट॥ मृति॥ स ल्य दार
 मृति वद लं॥ मित्य नील स मयु गि॥ दि
 य व धनू लिका॥ म॥ दिवा र व ल ह वि
 त॥ र्हा हित यु र्वा दि रु॥ ग॥ दिवा ता उा व
 ला वरु॥ अक्षय रुट॥ ॥ दक्षि॥ ॥
 उं अक्षय रुट॥ कवचन नयन॥ अक्षय रुट॥
 कवचन र्यव गधेता लूक ल॥
 कृणनया धनयिव विग सुत॥ मध्व॥
 उं अक्षय रुट॥ कवचन नयन॥ अक्षय रुट॥
 कवचन र्यव गधेता लूक ल॥
 कृणनया धनयिव विग सुत॥ मध्व॥
 उं अक्षय रुट॥ कवचन नयन॥ अक्षय रुट॥
 कवचन र्यव गधेता लूक ल॥
 कृणनया धनयिव विग सुत॥ मध्व॥
 उं अक्षय रुट॥ कवचन नयन॥ अक्षय रुट॥
 कवचन र्यव गधेता लूक ल॥
 कृणनया धनयिव विग सुत॥ मध्व॥

नशादुदयनहृन्मवागम
एन्वत्वमृगस्यथा।समृजी
कोरुर्वदनामुनि॥डंकांम

ताम्रद्विःशहासंयतिहयद्वय

[illegible]

म॥ ॐ नमो ॥ ॥ ॐ कौकोमा
 येनम॥ ॐ श्रीमिदु॥ ॐ धेयुयेन
 म॥ ॐ यविषय॥ ॐ कौवां वृधाय
 २॥ ॐ उदुधत्वा॥ ॐ कौजा वृहस्य
 मय२॥ ॐ वृहस्यग॥ ॥ ॐ कौनः
 मदाये२॥ ॐ यंचनद्य॥ ॐ कौम
 नय२॥ ॐ समुद्रं क्षया॥ ॥ ॐ क
 यश्वदाय२॥ ॐ ॐ यत्वा॥ ॐ कौ
 पुनाय॥ २॥ ॐ सुदनाज॥ ॥ म
 ध॥ ॥ यमायदधुहस्ययथगाधिः
 यनथमरिष्यासनाय२॥ ध्यान॥
 कृगानं मरिष्यावृष्टं दधुया निरुः
 यानक। कालयागधनं कारं ध्या
 यद्विदियमि॥ ॐ कौमं यमा
 यनम॥ ॐ यमनदत्तं॥ ॐ कौद्रु
 वम॥ ॥ वाय२॥ ॐ यामवृद्ध॥ ॐ
 कौक कववायद्रु॥ ॥ यत्नव॥
 ॐ सुवत्स॥ ॐ कौयुतुलीकधजा
 य२॥ ॐ सुमाकमिदु॥ ॥ वृ॥ ॐ

वृहस्यग॥ ॥ यवसू॥ ॐ व
 काहनं॥ नका॥ ॐ त्वेजवि॥
 यथा॥ ॐ यमयथा॥ यन्म
 दि॥ ॐ कौकालायनमृनिव
 गालाया॥ ॐ मृनिदूरी॥ धूप
 दीप॥ ॐ यमुनि॥ दधुहस्य
 यमादवाधमाधकोमहा
 वल॥ ॥ त्वं समावाहयिष्या
 मि॥ धर्मनाजनमासुता॥ ॥
 मृगर्गध॥ ॥

पश्चिमदानयूजा॥ आसादि
 ॥ कौनिम्ववृद्धाय२॥ ॐ ॐ द
 विष्ट॥ ॐ सुसावलाय२॥ ॐ
 यामिष्य॥ ॥ ॐ कौपतिष्टा
 नाय२॥ ॐ द्यानायदी॥ ॐ
 कौवत्रनात्रलाय२॥ वत्सनि
 ॥ ॥ ॐ कौवृषराय२॥ ॐ
 येउवाजिकनिकदनावृह
 जाससंयत्वा॥ रुनथानिय
 नायमायायययना॥ वृथा
 निवृषर्गहननया॥ ॐ समुद्र

[illegible]

ननु ॥ यश्च स्रग ॥ दुं वक्रा रुनी ॥
 वक्रा ॥ दुं लं ऊ वि ॥ यथा ॥ दुं
 यनय वनादि ॥ दं ऊ य नि
 कला द्वा द्वा गार्था वि ॥ दुं व नू
 रा श्चोरु ॥ धू प दी य ऊ य मु नि
 ॥ यो न रु स्ता स्म कानि र्थ ऊ ल
 ॥ आ म दा व र ॥ नि म ग र्था
 य वि र्था नो ना ग वा जा य न न
 म ॥ अ ग र्ग धा दि ॥

॥ उरु न दाने यूजा ॥ आसादि
॥ गायत्री मन्त्र निति कर्त्तव्यं ॥
ॐ नमो जामि ॥ आसन ॥ ॐ
यवस्य स्वा ॥ मूख्य कर्त्तव्यं ॥ रुद्रोक्ता
॥ यश ॥ ॐ यस्वो लिष्ट यगा ॥ ॐ
मूर्च्छेत् रुद्रो यश ॥ ॐ ॐ द
विष्ट ॥ ॐ भूयस्व ताया ॥ ॐ
यामिष्ट ॥ ॐ ॐ निष्टुहि दा
नायश ॥ ॐ दात्रो दयी ॥ ॐ ॐ
मूर्च्छो नाना यश ॥ ॐ य
स्वो निष्ट ॥ ॐ ॐ यश ॥ ॐ

मनी कुरु समीपं गत्वा ॥
 सा सादयूजा ॥ निहाय यानि
 कृणानि कुरु वनानि वनानि
 यः । वयसि युनिवसा अं व

सिंहासनमा गौरुन वा यथा
श्रुति कार्यं कृत्वा मीसस ग
लं यत्नं संपूर्णं ॥ रुद्रं ह्येव
वैविद्यानि वेदमा क्राव्यं
दिभे ॥
सिंहासनमा गौरुनी ॥ यत्नं
सिंहासनं सुखं ककीरु

वामनीति वा रुमानोऽ २
सर्वं गच्छ सिद्धा समा
किं गायत्री य १० ॥ १० ॥

येनावाक्यं काचमसिपु
कथाऽयमदि नमिनाः लो
नयालादिः यथायथ
नामाऽपि विगलवटक
आमिनीकृणयाला ॥ सं ह
यकृष्यमाल विनकनय
गाऽस्व स्वमडाऽययका
वास्तुजोति आताऽकनकम
यत्तऽप्रदयारिऽयलो
मि ॥

मूथसायानयुजा ॥ ३७
समीर्यगन्वा ॥ मूथा ॥ उडाहलाका
यत्तऽप्रदयारिऽयलो ॥ ३८
मलाकायड विनकृथावायुद
वताय २४ ॥ उडाखेलाकार्यनू
दृष्टं ददिल्यदवताय २॥ उडांम
हलाकायवृहती कृत्वा वृहस्पति

ASHA ARCHIVES

आशा नरुवाधि

2095

I

ARCHIVES